Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوۡلُ بَلِّغۡ مَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡكَ مِنۡ رَّبِّكَ ؕ وَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلۡ فَمَا بَلَّغۡتَ رِسَالَـتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعۡصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : हे रसूल! अच्छी तरह पहुंचा दे जो तेरे रब की तरफ़ से तेरी तरफ़ उतारा गया है। और यदि तू ने ऐसा नहीं किया तो गोया तू ने उस के पैग़ाम को नहीं पहुंचया। और अल्लाह तुझे लोगों से बचाएगा। निसंदेह अल्लाह काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं देता ।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 6
अंक- 31

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

25 ज़विल हज्ज 1442 हिज्री कमरी 5 ज़हूर 1400 हिज्री शम्सी 5 अगस्त 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

ज़कात देने की बैअत

(1401) हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बैअत नमाज़ सँवार कर पढ़ने, ज़कात देने और हर एक मुस्लमान की भलाई करने पर की।

ज़कात न देने वाले का गुनाह

(1402) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया (क़ियामत के दिन)ऊंट अपने मालिक के पास अच्छी हालत में आएँगे, जैसे वे थे तो यदि उसने उनका वह हक़ जो उन के सम्बन्ध में है नहीं दिया होगा तो वह उस को अपने पांव से रौंदेंगे और बकरियां भी अपने मालिक के पास अच्छी हालत में आएँगी जैसे वे थीं। यदि उसने उन का वह हक़ जो उन से सम्बन्ध में है नहीं दिया होगा तो वह अपने खुरों से उसको रौंदेंगी और सींगों से मारेंगी। फ़रमाया : तुम में से कोई क़ियामत के दिन ऐसी हालत में नहीं आए कि बकरी को उसने अपनी गर्दन पर उठाया हुआ हो और वह भायं भायं कर रही हो। फिर पुकारे : मुहम्मद! मैं कहूँगा मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। मैं ने तो (पैग़ाम-ए-हक़) पूरी तरह पहुंचा दिया था और न कोई अपनी गर्दन पर ऊंट को उठाए हुए आए कि वह बड़ बड़ कर रहा हो फिर वह कहे : मुहम्मद! मैं कहूँगा: मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। मैं ने तो (अल्लाह का पैग़ाम) अच्छी तरह पहुंचा दिया था।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

मैं ने अल्लाह तआला ने मामूर करके भेजा है परन्तु यदि अल्लाह तआला की महानता कुछ भी उनके दिल में होती तो वे इन्कार न करते और उससे डर जाते कि ऐसा न हो कि हम ख़ुदा तआला के नाम का कम करने वाले ठहरें,

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नेक कर्मों की पहचान

ये लोग समझते नहीं कि हम में कौन सी बात इस्लाम के ख़िलाफ़ है। हम ला इलाह इल्लल्लाहु कहते हैं और नमाज़ें भी पढ़ते हैं रोज़े के दिनों में रोज़े भी रखते हैं और ज़कात भी देते हैं। परन्तु मैं कहता हूँ कि ये समस्त कर्म, नेक कर्मों के रंग में नहीं हैं, बल्कि केवल एक छिलका की तरह हैं जिनमें सार नहीं है; वर्ना यदि ये नेक कर्म हैं तो फिर उनके पवित्र परिणाम क्यों पैदा नहीं होते? नेक कर्म तो तब हो सकते हैं कि वे हर प्रकार के उपद्रव और मिलावट से पवित्र हों,परन्तु इन में ये बातें कहाँ हैं?मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता कि एक मोमिन मुत्तक़ी हो और नेक कर्म करने वाला हो और वह अह्ले हक़ का दुश्मन हो; हालाँकि ये लोग हमको बेक़ैद और नास्तिक कहते हैं और ख़ुदा तआला से नहीं डरते। मैंने अल्लाह तआला की क़सम खाकर वर्णन किया कि मुझको अल्लाह तआला ने मामूर करके भेजा है परन्तु यदि अल्लाह तआला की महानता कुछ भी उनके दिल में होती तो वे इन्कार न करते और उससे डर जाते कि ऐसा न हो कि हम ख़ुदा तआला के नाम का कम करने वाले ठहरें, परन्तु ये तब होता जबकि उनमें वास्तविक और उच्च ईमान अल्लाह तआला पर होता और वे कर्म फल के दिन से डरते और لَا تَقۡفُ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهٖ عِلۡمٌ (बनी इस्राईल 37) पर उनका अनुकरण होता।

औलिया अल्लाह का इन्कार ईमान के छिन जाने का कारण हो जाता है

उनकी दिमाग़ी क़ुव्वत और ईमानी ताक़त ने तो यहां तक उन्हें पहुंचाया है कि वे कहते हैं कि नबी का इन्कार करने वाला तो काफ़िर होता है। परन्तु वली के इन्कार से कुफ्र क्यों अनिवार्य होता है। वे समझते हैं कि एक व्यक्ति के इन्कार से क्या हर्ज? ये लोग अल्लाह के औलिया के इनकार को मामूली बात समझते हैं और कहते हैं कि इससे क्या बिगड़ता है? परन्तु वास्तविकता यह है कि औलिया अल्लाह का इन्कार ईमान के छिनने का कारण होता है। जो व्यक्ति

शेष पृष्ठ 12 पर

बहुत से गुनाहों का कारण औलाद की मुहब्बत भी होती है, ऐसी मुहब्बत जो औलाद को ख़राब कर दे मुहब्बत नहीं दुश्मनी है

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हमें सबक़ दिया है कि औलाद की मुहब्बत इस हद तक होनी चाहीए जिस से वे बिगड़ न जाए

हमें चाहिए कि औलाद की मुहब्बत पर ख़ुदा की मुहब्बत ग़ालिब रखें कि यह ख़ुदा तआला की ही ख़ुशनुदी का कारण नहीं बल्कि अपनी औलाद की हिफ़ाज़त का भी माध्यम है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर: इब्राहीम आयत नम्बर 37 رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضۡلَلۡنَ كَثِيۡرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنۡ تَبِعَنِىۡ فَاِنَّهٗ مِنِّىۡ ۚ وَمَنۡ عَصَانِىۡ فَاِنَّكَ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

ख़ुदा के प्रेम का कैसा पवित्र प्रकटन है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मेरी औलाद यदि शिर्क नहीं करेगी तब तो वे मेरी औलाद है अन्यथा नहीं। इस आयत से यह भी परिणाम निकलता है कि बहुत से गुनाहों का कारण औलाद की मुहब्बत भी होती है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हमें सबक़ दिया है कि औलाद की मुहब्बत इस हद तक होनी चाहीए जिससे वे बिगड़ न जाए। ऐसी मुहब्बत जो औलाद को ख़राब कर दे मुहब्बत नहीं दुश्मनी है। शारीरिक आराम से रुहानी और अख़लाक़ी दुरुस्ती का ख़्याल प्रथम रहना चाहीए। यदि औलाद अतिरिक्त प्रयास के दरुस्त न हो तो एक वक़्त ऐसा आ सकता है कि उस से सम्बन्ध तौड़ना ज़रूरी हो। क्योंकि जब उनको मालूम हो कि माँ बाप हमारे दोष देखते हुए भी अनदेखा करते हैं तो वे ग़लत राह पर चलते जाते हैं। लेकिन जब उनको मालूम हो कि हमारी ग़लती पर उचित पकड़ होती है तो उनकी इस्लाह होती जाती है। इस लिए हमें चाहिए कि औलाद की मुहब्बत पर ख़ुदा की मुहब्बत ग़ालिब रखें कि यह ख़ुदा तआला की ही ख़ुशनुदी का कारण नहीं बल्कि अपनी औलाद

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग -2)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़-ए-ईद के बाद फ़रमाया कि हम ख़ुतबा देंगे, जो चाहे सुनने के लिए बैठा रहे और जो जाना चाहे चला जाए, क्या यह हदीस ठीक है? ,क्या यह एतिकाफ़ घर पर किया जा सकता है और क्या यह एतिकाफ़ तीन दिन के लिए हो सकता है? , बच्चियों को स्कार्फ किस आयु में लेना चाहिए

नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)

प्रश्न : एक मित्र ने पूछा कि दारुल क़ुतनी में एक हदीस है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़-ए-ईद के बाद फ़रमाया कि हम ख़ुतबा देंगे, जो चाहे सुनने के लिए बैठा रहे और जो जाना चाहे चला जाए, क्या यह हदीस ठीक है? इस पर हुज़ूर अनवर ने अपने लेख तिथि 20 अक्तूबर 2020 ई. में निम्नलिखित उत्तर फ़रमाया :

उत्तर : ख़ुतबा ईद के सुनने से छूट पर आधारित हदीस जिसे आपने दारुल क़ुतनी के हवाले से अपने ख़त में वर्णन किया है, सुंन अबी दाऊद में भी रिवायत है।

यह बात दरुस्त है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुतबा ईद के सुनने की इस तरह ताकीद नहीं फ़रमाई जिस तरह ख़ुतबा जुमा में हाज़िर होने और उसे मुकम्मल ख़ामोशी के साथ सुनने की ताकीद फ़रमाई है। इसी आधार पर ओलामा और फौकाहा ने ख़ुतबा ईद को सुन्नत और मुस्तहब क़रार दिया है।

लेकिन इसके साथ यह बात भी याद रखनी चाहिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ईद के लिए जाने और दुआ मुस्लेमीन में शामिल होने को नेकी और बरकत क़रार दिया है और इस की यहां तक ताकीद फ़रमाई कि ऐसी महिलाएं जिसके पास अपनी ओढ़नी न हो वे भी किसी बहन से कुछ देर के लिए ओढ़नी लेकर ईद के लिए जाए और मासिक धर्म के दिनों वाली महिलाएंओं को भी ईद पर जाने की इस हिदायत के साथ ताकीद फ़रमाई कि वे नमाज़ की जगह से अलग रह कर दुआ में शामिल हों।

प्रश्न : महिलाएं ने रमज़ानुल मुबारक के एतिकाफ़ के बारे में पूछा कि क्या यह एतिकाफ़ घर पर किया जा सकता है और क्या यह एतिकाफ़ तीन दिन के लिए हो सकता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र 9 अगस्त 2015 ई. में इस विषय का निम्नलिखित उत्तर फ़रमाया :

उत्तर : जहाँ तक रमज़ान के मस्नून एतिकाफ़ का सम्बन्ध है वह तो जैसा कि क़ुरआन-ओ-हदीस से साबित है घर पर और तीन दिन के लिए नहीं हो सकता।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत से साबित होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रमज़ानुल मुबारक में कम अज़ कम दस दिन, मस्जिद में एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे। इसलिए हदीस में आता है

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَعْتَكِفُ الْعَشْرَ الْأَوَاخِرَ مِنْ رَمَضَانَ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ۔(صحیح بخاری کتاب الاعتکاف با ب الاعتکاف فی العشر الاواخر والاعتکاف فی المساجد کلھا)

अनुवाद हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी वफ़ात तक रमज़ान के अंतिम दस दिन एतिकाफ़ फ़रमाते रहे।

इसी तरह क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला ने जहां रमज़ान के मसाइल वर्णन फ़रमाए हैं वहां एतिकाफ़ के बारे में आदेश देते हुए फ़रमाया :

(وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُوْنَ فِي الْمَسَاجِدِ۔ (سورۃالبقرۃ:188 कि रमज़ान के एतिकाफ़ में एक तो पति पत्नी के सम्बन्धों की आज्ञा नहीं और दूसरा यह कि एतिकाफ़ बैठने की जगह मस्जिदें हैं।

हदीसों में भी इस बात की वज़ाहत आई है कि रमज़ान का एतिकाफ़ मस्जिद में ही हो सकता है। इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं : السُّنَّةُ عَلَى الْمُعْتَكِفِ أَنْ لَا يَعُوْدَ مَرِيضًا وَلَا يَشْهَدَ جَنَازَةً وَلَا يَمَسَّ امْرَأَةً وَلَا يُبَاشِرَهَا وَلَا يَخْرُجَ لِحَاجَةٍ إِلَّا لِمَا لَا بُدَّ مِنْهُ وَلَا اعْتِكَافَ إِلَّا بِصَوْمٍ وَلَا اعْتِكَافَ إِلَّا فِي مَسْجِدٍ جَامِعٍ۔ (سنن ابی داؤد کتاب الصوم باب المعتکف یعود المریض) अनुवाद : मौतकिफ़ (एतिकाफ़ बैठने वाले) के लिए मस्नून है कि वह मरीज़ की इयादत (रोगी का हाल पूछने और उसे ढारस देने के लिए उसके पास) न करे और न जनाज़ा में शामिल हो, न अपनी पत्नी को छूए और न उस से शारीरिक सम्बन्ध क़ायम करे। और अतिरिक्तए अत्यधिक ज़रूरत के जिसके अतिरिक्त चारा न हो मस्जिद से बाहर न जाए। और रोज़ों के बग़ैर एतिकाफ़ दरुस्त नहीं और न ही जामा मस्जिद के अतिरिक्त दूसरी जगहों पर एतिकाफ़ दरुस्त है।

अत: क़ुरआन-ए-करीम हदीस नब्विया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसार रमज़ानुल मुबारक का मस्नून एतिकाफ़ कम अज़ कम दस दिन होता है और इस के लिए मस्जिद में ही बैठा जाता है।

हाँ रमज़ान के अतिरिक्त आम दिनों में यदि नेकी के तौर पर और सवाब की ख़ातिर कोई अपने घर में कुछ दिन के लिए एतिकाफ़ करना चाहता है तो इस की भी आज्ञा है और इसकी कहीं मनाही नहीं मिलती। अतिरिक्त इसके कुछ फ़ुक़्हा ने महिलाएं के घर में एतिकाफ़ करने को बेहतर क़रार दिया है। इसलिए फ़िक़्हा की प्रसिद्ध पुस्तक हिदाया में लिखा है :

(اما المرأۃ تعتکف فی مسجد بیتھا (ھدایہ باب الاعتکاف अर्थात महिलाएं अपने घर में नमाज़ पढ़ने की जगह में एतिकाफ़ बैठ सकती है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में फ़रमाते हैं : "मस्जिद के बाहर एतिकाफ़ हो सकता है परन्तु मस्जिद वाला सवाब नहीं मिल सकता।"

(रोज़नामा अलफ़ज़ल 6 मार्च 1996 ई.)

प्रश्न : गुलशने वक़्फ़-ए-नौ आस्ट्रेलिया तिथि 12 अक्तूबर 2013 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रश्न किया कि बच्चियों को स्कार्फ किस आयु में लेना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का उत्तर इरशाद फ़रमाते हुए फ़रमाया :

उत्तर : जब तुम पाँच वर्ष की हो जाओ तो उस वक़्त तुम्हें बग़ैर Leggings के फ़्राक नहीं पहननी चाहिए, तुम्हारी टांगें ढकी होनी चाहिऐं ताकि तुम्हें एहसास हो कि आहिस्ता-आहिस्ता हमारा ड्रैस जो है वह Cover होना चाहिए। Sleeve-less फ़्राक नहीं पहननी चाहिए। फिर छ: सात वर्ष की हो जाओ तो तुम्हारी Leggings में और एहतियात हो। और जब तुम दस वर्ष की हो जाती हो तो थोड़ा सा स्कार्फ लेने की आदत डालो। और जब ग्यारह वर्ष की हो जाओ तो फिर स्कार्फ पूरी तरह लो। स्कार्फ लेने में तो कोई हर्ज नहीं? स्कार्फ तो यहां भी लोग सर्दियों में ले लेते हैं। सर्दी होती है तो अपने कान नहीं लपेट लेते? वह स्कार्फ ही होता है। उस तरह का स्कार्फ लो।

कुछ लड़कियां होती हैं, जो दस वर्ष की आयु में भी छोटी सी नज़र आती हैं। और कुछ ऐसी होती हैं जो दस वर्ष की आयु में 12 वर्ष की लड़की की तरह नज़र आती हैं, उनके क़द लंबे हो जाते हैं। तो हर लड़की देखे कि वह यदि बड़ी बड़ी नज़र आती है, तो उस को स्कार्फ ले लेना चाहिए। छोटी आयु में स्कार्फ लेने की आदत डालोगी तो फिर शर्म नहीं आएगी, नहीं तो सारी जिन्दगी शरमाती रहोगी। यदि तुम कहोगी कि 12 वर्ष की आयु में, तेराह वर्ष की आयु में, चौदह वर्ष की आयु में जा कर स्कार्फ लूँगी, तो फिर सोचती रहोगी और फिर तुम्हें शर्म आ जाएगी। फिर तुम कहोगी ओहो कहीं लड़कियां मेरा मज़ाक़ नहीं उड़ाईं। मैंने स्कार्फ लिया तो वे मुझ पर हँसेंगी। इसलिए कभी कभी स्कार्फ

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

"अफ़सोस अफ़सोस मैं क्या ही बुरा निगरान हूँगा यदि उस का अच्छा हिस्सा मैं खाऊं और लोगों को उस का रद्दी हिस्सा खिलाऊँ, यह पियाला उठा लो और हमारे लिए इसके अतिरिक्त कोई और खाना लाओ'' (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक इरशाद के अधीन जब यहूदियों और ईसाइयों को यमन से निकाला तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी ज़मीनें ज़बत नहीं कीं बल्कि उनकी ज़मीनें खरीदीं

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में सतरह हिज्री में मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी हुई, जनगणना शुरू की गई, प्रजा में राशनिंग सिस्टम का आरंभ हुआ, शूरा का क़ियाम अमल में आया, मुहासिल का निज़ाम क़ायम किया गया, खेती की तरक़्क़ी के लिए क़दम उठाए गए

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

"इस्लाम ही है जिसने मुल्की हुक़ूक़ भी क़ायम किए हैं, इस्लाम के नज़दीक हर व्यक्ति की ख़ुराक, रिहायश और लिबास की ज़िम्मेदार हुकूमत है और इस्लाम ने ही सबसे पहले इस उसूल को जारी किया है।" (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बीस हिज्री में अधिकृत देशों को आठ राज्यों में तक़सीम फ़रमायाता ताकि इंतिज़ामी उमूर में आसानी रहे, नंबर एक मक्का, नंबर दो मदीना, नंबर तीन शाम, नंबर चार जज़ीरा, नंबर पाँच बस्रा, नंबर छ: कूफ़ा, नंबर सात मिस्र और नंबर आठ फ़लस्तीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में जो व्यक्ति आमिल निर्धारित होता इस से यह अह्द लिया जाता कि वह तुर्की घोड़े पर सवार नहीं होगा, बारीक कपड़े नहीं पहनेगा, छन्ना हुआ आटा नहीं खाएगा, दरवाज़े पर दरबान निर्धारित नहीं करेगा, ज़रूरतमंदों के लिए हमेशा दरवाज़े खुले रखेगा, आमिलीन निर्धारित करने के बाद उनके धन और वस्तुओं की जांच की जाती थी यदि आमिल की माली हालत में ग़ैरमामूली तरक़्क़ी होती जिसके बारे में वह तसल्ली नहीं करवा सकते तो उस की पकड़ की जाती और अधिक धन बैत-उल-माल में जमा करवा लिया जाता

मर्कज़ी विभाग अहमदिया अभिलेखागार और रिसर्च सैंटर की तरफ़ से तैयार करदा अहमदिया वेबसाइट www. ahmadipedia. org के इजरा का ऐलान

यह वेबसाइट समस्त जमाअत के सहयोग से जारी-ओ-सारी रहने वाला प्राजैक्ट बनेगी और इन शा अल्लाह हर अहमदी के लिए लाभदायक होगी

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 2 जुलाई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन चल रहा है। इसी विषय में आज भी वर्णन करूँगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सम्बन्ध में एक रिवायत में आता है कि उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक इरशाद के अधीन जब यहूदियों और ईसाइयों को यमन से निकाला तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनकी ज़मीनें ज़बत नहीं कीं बल्कि उनकी ज़मीनें खरीदें। मजीद फ़रमाते हैं कि यमन की ज़मीन जो ईसाइयों और यहूदियों के अधीन थी वह खाराजी थी लेकिन जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वे ज़मीन यहूदियों और ईसाइयों से ले ली और उनको अरब के जज़ीरे से निकाल दिया तो अतिरिक्त इस के कि वे ज़मीन खाराजी थीं और उसूली तौर पर हुकूमत उसकी मालिक समझी जाती थी उन्होंने वे ज़मीन उनसे छीनी नहीं बल्कि ख़रीदी। इसलिए फ़तह अल्बारी शरह बुख़ारी में यह हदीस दर्ज है कि इन यह عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيْدٍ أَنَّ عُمَرَ أَجْلَى أَهْلَ نَجْرَانَ وَالْيَهُوْدَ وَالنَّصَارٰى وَاشْتَرٰى بَيَاضَ أَرْضِهِمْ وَكُرُوْمَهُمْ۔ अर्थात यहया बिन सईद रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नजरान के मुशरिकों और यहूदियों और ईसाइयों को वहां से देश निकाला कर दिया और उनकी ज़मीनें और बाग़ ख़रीद लिए। यह ज़ाहिर है कि यहूदियों की ज़मीन उशरी नहीं हो सकती क्योंकि यदि वह उशरी थी तो उस का मालिक कोई मुस्लमान होगा। अत: यहूदियों से उस के ख़रीदने का कोई प्रशन ही नहीं था। वे निसंदेह ख़राजी थी जैसा कि हिन्दुस्तान की ज़मीन को ख़राजी क़रार दिया जाता है लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस को ख़राजी क़रार देकर और हुकूमत को उस का मालिक क़रार देकर उस को ज़बत नहीं किया बल्कि उस को ख़रीदा। शायद कोई कहे कि यह ज़मीन न ख़राजी होगी न उशरी बल्कि किसी और किस्म की होगी तो यह ख़्याल बेहूदा होगा और इस्लामी शरीयत से न-वाक़िफ़ी की प्रमाण होगा। उशरी और ख़राजी के अतिरिक्त और कोई ज़मीन इस्लाम में नहीं अतिरिक्तए इसके कि वह बेकार पड़ी हुई हो और इस का मालिक कोई व्यक्ति वाहिद न हो। अत: लाज़िमन यहूदी और नसरानी और मुशरिक नजरान वालों की ज़मीनें या ख़राजी थीं या उशरी थीं परन्तु दोनों सूरतों में उनका मालिक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके क़ाबिज़ों को क़रार दिया और उनसे वे ज़मीनें ख़रीदी गईं।

(उद्धरित इस्लाम और मिल्कियत ज़मीन, अनवारुल उलूम भाग 21 पृष्ठ 444 से 478-479)

इस्लाम में जंगी क़ैदियों के अतिरिक्त ग़ुलाम बनाने की मनाही का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला "फ़रमाता है تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا۔ हे मुसलमानो क्या तुम दूसरे लोगों की तरह यह चाहते हो कि तुम अन्य कौमों के लोगों को पकड़ कर अपनी ताक़त और क़ुव्वत को बढ़ा लो। وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ۔ अल्लाह तआला यह नहीं चाहता कि तुम दुनिया के पीछे चलो बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें उन आदेशों पर चलाएं जो परिणाम की दृष्टि से तुम्हारे लिए बेहतर हो और अगले संसार में तुम्हें अल्लाह तआला की प्रसन्नता और उस की ख़ुशनुदी का अधिकारी बनाने वाले हों और अल्लाह तआला की प्रसन्नता और परिणाम के ख़ुशगवार होने की दृष्टि से यही हुक्म तुम्हारे लिए बेहतर है कि तुम अतिरिक्तए जंगी क़ैदियों को जिन्हें दौरान-ए-जंग गिरफ़्तार किया गया हो और किसी को क़ैदी मत बनाओ। मानो जंगी क़ैदियों के अतिरिक्त इस्लाम में किसी किस्म के क़ैदी बनाने जायज़ नहीं। इस हुक्म पर शुरू इस्लाम में इस सख़्ती के साथ अमल किया जाता था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़िलाफ़त के समय में एक दफ़ा यमन के लोगों का एक वफ़द आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया और उसने शिकायत की कि इस्लाम से पहले हम को मसीहियों ने बिना किसी जंग के यूंही ज़ोर से ग़ुलाम बना लिया था अन्यथा हम आज़ाद क़बीला थे। हमें इस ग़ुलामी से आज़ाद कराया जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि जबकि इस्लाम से पहले का वाक़िया है परन्तु फिर

भी मैं इस की तहक़ीक़ात करूँगा। यदि तुम्हारी बात दरुस्त साबित हुई तो तुम्हें तुरंत आज़ाद करा दिया जाएगा। लेकिन इस विपरीत "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो मुक़ाबला कर रहे हैं आज कल के यूरोप का कि यह तो इस्लामी तालीम थी जिस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अमल करवाया या इस बारे में उनको तसल्ली करवाई लेकिन इस के विपरीत यूरोप में क्या होता है " यूरोप अपनी व्यापारों और खेती को बढ़ाने के लिए उन्नीसवीं सदी के शुरू तक ग़ुलामी को जारी रखता चला गया। इस में कोई संदेह नहीं कि इस्लाम की तारीख़ से एक ग़ैर इस्लामी ग़ुलामी का भी पता लगता है परन्तु फिर भी ग़ुलामों के माध्यम से मुल्की तौर पर तिजारती या औद्योगिक तरक़्क़ी करने का कहीं पता नहीं चलता।'' (इस्लाम का इक़तिसादी निज़ाम, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 26-27)इस्लाम में यह कोई तसव्वुर नहीं।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में बहुत सख़्त सूखा पड़ गया मदीना और इस के आस पास में सख़्त सूखा पड़ा। जब तेज़ हवा चलती तो राख की तरह मिट्टी उड़ आती थी। इस वजह से उस वर्ष का नाम आमुर रिमाद, राख का वर्ष रख दिया गया।

(तारीख़ तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 508 सुन्नता 18 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

औफ़ बिन हारिस अपने पिता से रिवायत करते हैं कि इस वर्ष का नाम आमुर रिमाद अर्थात राख का वर्ष इसलिए रखा गया कि सारी ज़मीन बारिश न होने की वजह से काली हो कर राख के समान हो गई थी और यह अवस्था नौ (9) माह रही। हिज़ाम बिन हिज़ाम बिन हाशिम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि अठारह हिज्री में लोग जब हज से वापस हुए तो उन्हें सख़्त तकलीफ़ पहुंची। मुल्क में सूखा फैल गया। जानवर मरने लगे और लोग भूख से मरने लगे यहां तक कि लोग सूखी हड्डियों को पीस कर उस को पानी में डाल कर पीने लगे और चूहों इत्यादि के बिलों को खोदते और इस में जो होता उसे निकालने लगे। हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रतअम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ आमुर रिमाद में पत्र लिखा

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम अल्लाह के बंदे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अमीर-ऊल--मोमनीन की तरफ़ से आसी बिन आसी के नाम। तुम पर सलामती हो। इसके बाद। क्या तुम मुझे और उन लोगों को मरता हुआ देखना चाहते हो जो मेरे पास हैं और तुम ज़िंदा हो और वे लोग जो तुम्हारे पास हैं वे भी ज़िंदा हों। क्या कोई मदद करने वाला है? यह आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने तीन दफ़ा लिखा उस पर। मदद मदद मदद

इस के जवाब में हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम अल्लाह जिसके अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं उसके बंदे की तरफ़। इसके बाद। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास मदद पहुंच गई। कुछ देर इंतिज़ार फ़रमाएं। मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ ऊंटों का एक क़ाफ़िला भेज रहा हूँ जिसका पहला ऊंट आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास होगा और इस का आख़िरी ऊंट मेरे पास होगा अर्थात इतना बड़ा क़ाफ़िला होगा। एक लंबी क़तार होगी।

वालिए मिस्र हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने अनाज और खाने के एक हज़ार ऊंट भेजे। घी और कपड़े इत्यादि इसके अतिरिक्त थे। वालिए इराक़ हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने दो हज़ार ऊंट अनाज और आहार के भेजे। कपड़े इत्यादि इसके अतिरिक्त थे। वालिए शाम हज़रत अमीर मुआविया ने तीन हज़ार ऊंट अनाज के भेजे और कपड़े इत्यादि इसके अतिरिक्त थे। जब पहला आहार आया तो हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। तुम क़ाफ़िले को रोक कर अहल-ए-बादिया की तरफ़ फेर दो। अर्थात जो गांव के रहने वाले हैं उनकी तरफ़ फेर दो। उनको पहले दो और उन लोगों में तक़सीम कर दो। ख़ुदा की कसम संभव है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत के बाद इस से अफ़ज़ल कोई वास्तु तुम्हें प्राप्त नहीं हुई होगी। इसके बोरों से लिहाफ़ बना दो जिसे वे लोग पहनें और ऊंटों को उन के लिए ज़िबह कर देना। वे लोग गोश्त खाएं और इस की चिकनाई उठा कर ले जाएं। तुम इंतिज़ार न करना कि वे कहें कि हम लोग बारिश के आने तक इंतिज़ार करेंगे। वे लोग आटा पकाएं और जमा करें यहां तक कि अल्लाह उन के लिए कुशादगी का हुक्म लाए। अर्थात कुछ पकाएं, खाईं और कुछ जो है वे स्टोर भी कर लें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो खाना तैयार करवाते और उनका ऐलान करने वाला ऐलान करता कि जो व्यक्ति चाहता है कि वे खाने के वक़्त हाज़िर हो और खाना चाहे तो वे ज़रूर ऐसा करे। और जो पसंद करता है कि जो खाना उस के लिए और उस के घर वालों के लिए पूरा हो तो वह आए और वह ले जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों को सरीद, अर्थात रोटी को तोड़ कर शोरबे में डाल कर जो खाना तैयार होता है वह खिलाते थे। यह रोटी होती थी जिसके साथ ज़ैतून का सालन होता था जो तुरंत देगों में पकाया जाता था। ऊंट ज़िबह किए जाते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी सब लोगों के साथ मिलकर खाते थे जिस तरह वे खाते थे।

अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन असलम अपने दादा असलम से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो निरंतर रोज़े रखते रहे। आमुर रिमाद के ज़माने में शाम के वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास रोटी लाई जाती जो ज़ैतून के तेल के साथ मिली होती थी। लोगों ने एक दिन ऊंट ज़िबह कर के लोगों को खिलाए। उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए उम्दा हिस्सा रख लिया। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास वह हिस्सा लाया गया तो उस में कोहान और कलेजी के टुकड़े थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरयाफ़त फ़रमाया कि यह कहाँ से आए? तो बताया गया कि हे अमीरुल-मोमनीन यह उन ऊंटों से है जो आज हमने ज़िबह किए थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अफ़सोस! अफ़सोस मैं क्या ही बुरा निगरान हूँगा यदि उस का अच्छा हिस्सा मैं खाऊं और लोगों को इस का रद्दी हिस्सा खिलाओं। यह पियाला उठा लो और हमारे लिए इस के अतिरिक्त कोई और खाना लाओ। इसलिए रोटी और ज़ैतून का तेल लाया गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने रोटी अपने हाथ से तोड़ी और इस से सरीद बनाया। फिर आप ने फ़र्माया हे यर्फ़ा! अपने ग़ुलाम से, तुम्हारा भला हो यह पियाला समद में एक घर वालों के पास ले जाओ। समद भी मदीना के क़रीब ख़जूरों का एक बाग़ था जिसके मालिक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो थे। उन्होंने उस बाग़ को वक़्फ़ किया हुआ था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि तीन दिन से मैं ने उनको कुछ नहीं दिया और मेरा ख़्याल है कि वे ख़ाली पेट होंगे। ये उनके सामने पेश कर दो।

हज़रत इब्ने उमर से रज़ियल्लाहु अन्हो मर्वी है कि सूखे के दिनों में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक नया काम किया जिसे वह पहले नहीं किया करते थे और वह यह था कि लोगों को इशा की नमाज़ पढ़ा कर अपने घर में दाख़िल हो जाते और रात के अंतिम भाग तक निरंतर नमाज़ पढ़ते रहते। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो बाहर निकलते और मदीना के चारों ओर चक्कर लगाते रहते। एक रात सेहरी के वक़्त मैंने उनको यह कहते हुए सुना कि اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هَلَاكَ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ عَلٰى يَدَيَّ कि हे अल्लाह! मेरे हाथों मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत को हलाकत में न डालना।

मुहम्मद बिन यहया बिन हबान वर्णन करते हैं कि सूखे के दिनों में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास एक दफ़ा चर्बी में डूबी हुई रोटी लाई गई। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक बदवी को अपने पास बुलाया और वह आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ बैठ कर खाना खाने लगा। वह जल्दी-जल्दी प्याले के किनारों से चर्बी लेने लगा। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। तुम तो ऐसे खा रहे हो जैसे कभी चर्बी नहीं देखी। उसने कहा बेशक मैंने कई दिनों से न घी खाया है और न ज़ैतून और न ही किसी को यह खाते देखा है। यह बात सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़सम खाई कि वह न तो गोश्त चखेंगे और न ही घी यहां तक कि लोग पहले की तरह ख़ुशहाल हो जाएं।

इब्ने ताऊस अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने न गोश्त खाया और न ही घी यहां तक कि लोग ख़ुशहाल हो गए और घी इत्यादि नहीं खाने और केवल तेल खाने की वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो का पेट गुड़ गुड़ करता था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो कहते अर्थात अपने पेट को सम्बोधित कर के कि तुम गुडगुडाते रहो। अल्लाह की क़सम! तुम्हें कुछ और नहीं मिलेगा तब तक कि लोग ख़ुशहाल न हो जाएं और पहले जैसा खाना शुरू न कर दें।

इयाज़ बिन ख़लीफ़ा कहते हैं कि मैंने सूखे के वर्ष हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का रंग कला हो गया था हालाँकि पहले आप रज़ियल्लाहु अन्हो का रंग सफ़ेद था। हम कहते यह कैसे हुआ तो रावी ने बताया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो एक अरबी आदमी थे। वह घी और दूध का इस्तिमाल करते थे। जब लोगों पर सूखा आया तो उन्होंने ये चीज़ें अपने ऊपर हराम कर लीं यहां तक कि लोग ख़ुशहाल हो जाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने तेल के साथ खाना खाया जिस से आप रज़ियल्लाहु अन्हो का रंग तबदील हो गया और जब भूखे रहे तो यह रंग मज़ीद तबदील हो गया।

उसामा बिन ज़ैद बिन असलम ने अपने दादा से रिवायत की कि हम लोग कहा करते थे कि यदि अल्लाह ने सूखा दूर न किया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मुस्लमानों की फ़िक्र में मर ही जाएंगे।

ज़ैद बिन असलम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि सूखे के ज़माने में सारे अरब से लोग मदीना आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों को हुक्म दिया था कि

वह उनका इंतिज़ाम करें और उन्हें खाना खिलाएं। मदीना के चारों तरफ़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने विभिन्न अस्हाब की डयूटी लगा दी थी जो एक एक क्षण की ख़बर शाम को जमा हो कर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को देते थे। सुबह से ले के शाम तक जो ख़बरें भी होती थीं शाम को आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास लाई जाती थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को वे ख़बरें पहुंचाई जाती थीं। मदीना के विभिन्न इलाक़ों में बदवी लोग आए हुए थे। एक रात जब लोग रात का खाना खा चुके तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि जिन्हों ने हमारे साथ रात का खाना खाया है उनकी गिनती करो। इसलिए उनकी गिनती की गई तो सात हज़ार के क़रीब लोग थे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि जो नहीं आए उन्हें और मरीज़ों और बच्चों को भी गिना करो। जब गिनती की गई तो वे चालीस हज़ार की संख्यां थी। कुछ दिन बाद यह संख्या बढ़ गई। दुबारा गिनती की गई तो जो लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ खाना खा रहे थे उनकी संख्या दस हज़ार और दूसरों की संख्या पच्चास हज़ार हो गई। इसी तरह सिलसिला चलता रहा यहां तक कि अल्लाह तआला ने बारिश नाज़िल फ़र्मा दी। जब बारिश हुई तो मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने आमिलीन को हुक्म दिया कि सब लोगों का उनके अपने अपने इलाक़े में वापसी का इंतिज़ाम करें और उन्हें आहार और सवारियां भी मुहय्या करें। रावी कहते हैं मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो स्वयं उन लोगों को रवाना करने के लिए आते थे।

(उद्धरित अल्तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 165 से 169 वर्णन हुज़्रह उमर बिन खत्ताब, प्रकाशन दारुल अह्या तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.) (लुग़तुल हदीस, भाग 1 पृष्ठ 234 ज़ेर -ए- लफ़्ज़ सरीद, नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई.) (फ़तह अल बारी शरह सही अल् बुख़ारी, भाग 5 पृष्ठ 460-461 हदीस 2764 दारुल आर्यन तुर्रास काहिरा 1986 ई.)

इर्द-गिर्द के लोग भूख से तंग आ कर शहर में आ गए थे। खाना उनको यहां मिलता था। जब हालात ठीक हो गए, बारिशें हो गईं और खेती इत्यादि हो सकती थी तो फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा वापिस जाओ और मेहनत करो और अपनी खेतियों को आबाद करो।

तारीख़ तिबरी में इस सूखे के ख़त्म होने के सम्बन्ध में लिखा है कि एक व्यक्ति ने स्वप्न देखा जिसके अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दुआ की तरफ़ तवज्जा दिलाई जिस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों में ऐलान किराया कि नमाज़-ए- इस्तस्क़ा पढ़ी जाएगी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया: मुसीबत अपने इंतिहा को पहुंच चुकी और अब इन शा अल्लाह ख़त्म होने वाली है। जिस क़ौम को दुआ की तौफ़ीक़ मिल गई अत: समझ लेना चाहीए कि उनकी मुसीबत दूर हो गई। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अन्य शहरों के गवर्नरों के नाम ख़त तहरीर फ़रमाए कि तुम मदीना और उनके चारों ओर के ख़ुदा के बन्दों के लिए नमाज़-ए- इस्तस्क़ा पढ़ो क्योंकि वे मुसीबत की इंतिहा को पहुंच गए हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुस्लमानों को नमाज़ इस्तस्क़ा के लिए बाहर मैदान में जमा किया और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो को लेकर हाज़िर हुए, संक्षेप ख़ुतबा पढ़ा और नमाज़ पढ़ाई फिर घुटनों के बल हो कर बैठे और दुआ शुरू की। اَللّٰھُمَّ إِیَّاكَ نَعْبُدُ وَإِیَّاكَ نَسْتَعِینُ، اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَارْضَ عَنَّا हे अल्लाह हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ से ही मदद की इच्छा रखते हैं। हे अल्लाह! हमें माफ़ फ़र्मा हम पर रहम कर और हमसे राज़ी हो जा। इस के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो वापस लौटे। अभी घर नहीं पहुंच पाए थे कि मैदान में बारिश की वजह से तालाब बन गया।

(तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 508-509 सन् 18 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987ई.)

एक रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुआ करते हुए अर्ज़ किया कि हे अल्लाह तेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में जब हम पर सूखा होती तो हम तेरे नबी के वास्ते बारिश की दुआ किया करते थे तो तू हम पर बारिश बरसाता था। आज हम तुझे तेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा का वास्ता देकर दुआ कर रहे हैं। अत: तू हमारी यह कहतसाली ख़त्म कर दे और हम पर बारिश नाज़िल फ़र्मा। इसलिए लोग अभी अपनी जगहों से हटे ने थे कि बारिश बरसनी शुरू हो गई। (अल् तब्कातुल कुबरा साद ,भाग 4 पृष्ठ 21 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

मस्जिद नब्वी में चटाईयां बिछाने का सिलसिला कब शुरू हुआ? पहले लोग इसी तरह नमाज़ पढ़ते थे और फ़र्श पर या कच्ची जगह पर नमाज़ पढ़ते थे। माथे पर मिट्टी लग जाया करती थी। इस के बाद फिर चटाईयों का रिवाज हुआ। इस बारे में अब्दुल्लाह बिन इब्राहीम से रिवायत है कि सबसे पहले मस्जिद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जिसने चटाई बिछाई वह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो थे। पहले लोग जब अपना सिर सज्दे से उठाते तो अपने हाथ झाड़ा करते थे। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने चटाईयां बिछाने का हुक्म दिया जो अक़ीक़ से लाई गईं और मस्जिद नब्वी में बिछाई गईं। अक़ीक़ भी एक वादी का नाम है जो मदीना के दक्षिण पश्चिम से शुरू हो कर उत्तर पश्चिम तक तक़रीबन डेढ़ सौ किलोमीटर तक फैली हुई वादी है। कहते हैं बहुत बड़ी वादी है।

(ماخوذ از ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء مترجم از شاہ ولی اللہ، جلد 3،صفحہ 236،مناقب فاروق اعظم، مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی)(सीरत नब्वी, पृष्ठ 168 दारुस्सलाम रियाज़ 1424 हिज्री)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में सतरह हिज्री में मस्जिद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बढ़ोतरी भी हुई थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दौर में मस्जिद कच्ची ईंटों से बनी हुई थी जिस की छत खजूर की टहनियों और पत्तों से बनी हुई थी और सतून खजूर के तनों के थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस को इसी हाल में रहने दिया और इस में कोई बढ़ोतरी या तबदीली नहीं की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की तामीर-ए-नौ और बढ़ोतरी करवाई परन्तु उसकी हैयत और तर्ज़-ए-तामीर में कोई तबदीली नहीं कराई। उन्होंने भी उसे इसी तरह के तर्ज़-ए-तामीर से बनवाया। छत पहले की तरह खजूर के पत्तों की ही रही। उन्होंने केवल सतून लक्कड़ी के डलवा दिए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सतरह हिज्री में मस्जिद की तामीर को अपनी अधीन मुकम्मल करवाया। इस बढ़ोतरी के बाद मस्जिद का रकबा सौ गुणा सौ (100x100) ज़रा अर्थात तक़रीबन पच्चास गुणा पच्चास (50x50) मीटर से बढ़कर एक सौ चालीस गुणा एक सौ बीस (140x120) ज़रा तक़रीबन सत्तर गुणा साठ (70x60) मीटर हो गया। इस रिवायत से ज़ाहिर होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में भी मस्जिद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वही रही जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में थी जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की नए निर्माण के साथ इस में काफ़ी बढ़ोतरी हो गई थी।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पुन: निर्माण किया जाए और लोगों को बारिश से बचाने का बंद-ओ-बस्त किया जाए जबकि लाल और सफ़ैद फूलों की सुन्दरता से इजतिनाब किया जाए क्योंकि यही फूलों की सुन्दरता इन्सान को मसाइब में दो-चार कर देती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने किफ़ायत-शिआरी से काम लिया और मस्जिद को इसी तर्ज़ पर तैयार किया जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र समय में हुआ करती थी। मस्जिद की बढ़ोतरी करते वक़्त उन्हें इस से जुड़े हुए मकानात हासिल करने पड़े जो कि उत्तर दक्षिण और पश्चिम की जानिब थे। कुछ लोगों ने अपनी इच्छा से ज़मीनें मस्जिद के लिए भेंट कर दीं और कुछ के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इफ़्हाम-ओ-तफ़्हीम और माली तरग़ीब का तरीक़ा इख़तियार करना पड़ा। इस तरह कुछ ज़मीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़रीद कर मस्जिद में शामिल करना पड़ी।

(उद्धरित जुस्तजू-ए-मदीना अज़ अब्दुल हमीद कादरी, पृष्ठ 459 ओरीएंटल पब्लीकेशन्ज़ लाहौर 2007 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में जनगणना का रिवाज भी शुरू हुआ आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने करवाई और राशनिंग सिस्टम (rationing system) भी ख़ुराक के लिए निर्धारित किया। इस विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि इस्लामी हुकूमत का अनुशासन किस तरह चलता था और क्या-क्या तब्दीलियाँ हुईं। क्या-क्या नई बातें इंतिज़ामी मुआमलात में पैदा और शुरू की गईं। आप लिखते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना में आ कर पहला काम यही किया था कि जायदाद वालों को बिना जायदाद वालों का भाई बना दिया। अंसार जायदादों के मालिक थे और मुहाजिर बिना जायदाद के थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार और मुहाजिरीन दोनों में भाईचारा क़ायम फ़र्मा दिया और एक एक जायदाद वाले को एक एक बिना जायदाद वाले से मिला दिया और इस में कुछ लोगों ने इतना बढ़ा चढ़ा कर बताना शुरू किया कि दौलत तो अलग रही, कुछ की यदि पत्नियाँ थीं तो उन्हों ने अपने अपने मुहाजिर भाईयों की ख़िदमत में यह पेशकश की कि वह उनकी ख़ातिर अपनी एक बीवी को तलाक़ देने को तैयार हैं। वह उनसे बे-शक शादी कर लें। यह मुसावात की पहली मिसाल थी जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना में जाते ही क़ायम फ़रमाई क्योंकि हुकूमत की बुनियाद दरअसल मदीना में ही पड़ी थी। उस ज़माने में ज़्यादा दौलतें नहीं थीं। यही सूरत थी कि अमीर और ग़रीब को इस तरह मिला दिया जाए कि हर व्यक्ति को खाने के लिए कोई चीज़ मिल सके। फिर एक जंग के अवसर पर भी रसूले करीम

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस तरीक़ को इस्तिमाल फ़रमाया जबकि इसकी शक्ल बदल दी। एक जंग के अवसर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि कुछ लोगों के पास खाने की कोई चीज़ नहीं रही या यदि है तो बहुत ही कम और कुछ के पास काफ़ी चीज़ें हैं। तो यह सूरत-ए-हाल देखकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिस जिस के पास जो कोई चीज़ है वे ले आए और एक जगह जमा कर दी जाए। इसलिए सब चीज़ें लाई गईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने राशन निर्धारित कर दिया। जबकि यहां भी वही तरीक़ आ गया कि सबको खाना मिलना चाहीए। जब तक संभव था सब लोग अलग अलग खाते रहे परन्तु जब यह काम नामुमकिन हो गया और ख़तरा पैदा हो गया कि कुछ लोग भूखे रहने लग जाएंगे तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब तुम्हें अलैहदा खाने की इजाज़त नहीं, अब सब को एक जगह से बराबर खाना मिले गा। यह अवसर की मुनासबत की दृष्टि से फ़ैसला हुआ था। कोई सोशलिज़्म का या कम्यूनिज़म का नज़रिया नहीं क़ायम किया गया था। बहरहाल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस हुक्म पर हम ने इस सख़्ती से अमल किया कि यदि हमारे पास एक खजूर भी होती तो हम उस का खाना सख़्त बददियानती समझते थे और उस वक़्त तक चैन नहीं लेते थे जब तक कि इस को स्टोर में दाख़िल नहीं कर देते थे। यह दूसरा उदाहरण था जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दिखाया। जब तक कि हालात ख़राब थे उस वक़्त तक यह इसी तरह होता था और यह उदाहरण आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ायम किया।

फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में दौलत भी आई और ख़ज़ानों के मुँह अल्लाह तआला ने इस्लाम के लिए खोल दिए। परन्तु अल्लाह तआला चाहता था कि इस बारे में तफ़सीली निज़ाम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद जारी होता लोग यह न कह दें कि यह केवल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विशेषता थी। कोई और व्यक्ति इसे जारी नहीं कर सकता। जब दौलतें आ गईं तो पुराना निज़ाम जारी हो गया लेकिन बाद में भी इस को अल्लाह तआला ने जारी करने का इंतिज़ाम फ़रमाया। वह किस तरह? आप लिखते हैं कि इसलिए इधर अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ से एक उदाहरण क़ायम कर दिया और इधर मदीना पहुंचते ही अंसार ने अपनी दौलतें मुहाजिरीन के सामने पेश कर दीं। मुहाजिरीन ने कहा हम यह ज़मीनें मुफ़्त में लेने के लिए तैयार नहीं। हम इन ज़मीनों पर बतौर मज़दूर काम करेंगे और तुम्हारा हिस्सा तुम्हें देंगे। लेकिन ये मुहाजिरीन की तरफ़ से अपनी एक ख़ाहिश का इज़्हार था। अंसार ने अपनी जायदादों के देने में कोई कमी नहीं की। यह ऐसी ही बात है जैसे गर्वनमैंट राशन दे तो कोई व्यक्ति न ले। इस से गर्वनमैंट के उपर आरोप नहीं आएगा। यही कहा जाएगा कि गर्वनमैंट ने तो राशन निर्धारित कर दिया था। अब दूसरे व्यक्ति की मर्ज़ी थी कि वह चाहे लेता या नहीं लेता। इसी तरह अंसार ने सब कुछ दे दिया। यह अलग बात है कि मुहाजिरीन ने न लिया। उद्देश्य अमली तौर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह काम अपनी ज़िंदगी में ही शुरू फ़र्मा दिया था। यहां तक कि जब बहरीन का बादशाह मुस्लमान हो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे हिदायत फ़रमाई कि तुम्हारे मुल्क में जिन लोगों के पास गुज़ारा के लिए कोई ज़मीन नहीं है तुम उनमें से हर व्यक्ति को चार दिरहम और कपड़े गुज़ारे के लिए दो ताकि वे भूखे और नंगे न रहें। इसके बाद मुस्लमानों के पास दौलतें आनी शुरू हो गईं। चूँकि मुस्लमान कम थे और दौलत ज़्यादा थी इसलिए किसी नए क़ानून के इस्तिमाल की इस वक़्त ज़रूरत महसूस नहीं हुई। क्योंकि जो ग़रज़ थी वह पूरी हो रही थी। उसूल यह है कि जब ख़तरा हो तब क़ानून जारी किया जाए और जब न हो उस वक़्त इजाज़त है कि हुकूमत इस क़ानून को जारी करे या न करे। फिर जो बात मैंने शुरू की थी, जो मैं वर्णन करना चाहता था बीच में दूसरी तफ़सील आ गई। अब वह बात यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद यह निज़ाम किस तरह जारी हुआ?

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वफ़ात पा गए और मुस्लमान दुनिया के मुख़्तलिफ़ किनारों में फैलना शुरू हुए तो उस वक़्त ग़ैर कौमें भी इस्लाम में शामिल हो गईं। अरब लोग तो एक जत्था और एक क़ौम की शक्ल में थे और वह आपस में बराबरी भी क़ायम रखते थे। जब इस्लाम मुख़्तलिफ़ किनारों में पहुंचा और मुख़्तलिफ़ कौमें इस्लाम में दाख़िल होनी शुरू हुईं तो वहां के लिए रोटी का इंतिज़ाम बड़ा मुश्किल हो गया। आख़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त लोगों की जनगणना कराई और राशनिंग सिस्टम (rationing system) क़ायम कर दिया जो बनू उमय्या के समय तक जारी रहा। यूरोपीयन मुर्ख़ भी तस्लीम करते हैं कि सबसे पहली जनगणना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने करवाई थी और वह यह भी तस्लीम करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह सबसे पहली जनगणना प्रजा से दौलत छीनने के लिए नहीं बल्कि उनके आहार का इंतिज़ाम करने के लिए जारी की थी। और हुकूमतें तो इस लिए जनगणना कराती हैं कि लोग क़ुर्बानी के बकरे बनें और फ़ौजी ख़िदमात उन से लिया करें। परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इसलिए जनगणना नहीं कराई कि लोग क़ुर्बानी के बकरे बनें बल्कि इसलिए कराई कि उनके पेट में रोटी डाली जाए, यह देखा जाए कि कितने लोग हैं और ख़ुराक का कितना इंतिज़ाम करना है? इसलिए जनगणना के बाद समस्त लोगों को एक निर्धारित निज़ाम के अधीन आहार मिलता रहे और जो बाक़ी ज़रूरीयात रह जातीं उन के लिए उन्हें प्रति माह कुछ रक़म दे दी जाती और इस बारह में इतनी एहतियात से काम लिया जाता था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जब शाम फ़तह हुआ और वहां से ज़ैतून का बेशुमार तेल आया और हर एक को ज़ैतून का तेल मिलने लग गया। तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक दफ़ा लोगों से कहा कि ज़ैतून के इस्तिमाल से मेरा पेट फूल जाता है। अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ुद भी मिलता था, उस में से तेल लेते थे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि ज़ैतून का जब मैं ज़्यादा इस्तिमाल करूँ तो मेरा पेट फूल जाता है। तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं बैतुल माल से उतनी ही क़ीमत का घी ले लिया करूँ। और ज़ैतून क्योंकि मेरी सेहत के लिए ठीक नहीं है तो जितनी क़ीमत का ज़ैतून है उतनी क़ीमत का घी ले लिया करूँ। उद्देश्य यह पहला क़दम था जो इस्लाम में लोगों की ज़रूरीयात को पूरा करने के लिए उठा या गया और ज़ाहिर है कि यदि यह निज़ाम क़ायम हो जाएगा तो उसके बाद किसी और निज़ाम की ज़रूरत नहीं रहती क्योंकि सारे मुल्क की ज़रूरीयात की ज़िम्मेदार हुकूमत की होगी। उन का खाना, उनका पीना, उनका पहनना, उनकी तालीम, उनकी बीमारीयों का ईलाज और उन की रिहायश के लिए मकानात की तामीर यह सब का सब इस्लामी हुकूमत के ज़िम्मा होगा और यदि ये ज़रूरीयात पूरी होती रहें तो किसी बीमा इत्यादि की ज़रूरत नहीं रहती। बीमे इसलिए लोग करवाते हैं ताकि बाद में हम अपने बच्चों के लिए कुछ छोड़ जाएं या जब बुढ़ापे में कमाई नहीं कर सकते तो अपनी ज़रूरीयात पूरी कर सकें। जब हुकूमत यह ज़िम्मेदारी ले-ले तो फिर किसी भी बीमे की ज़रूरत नहीं रहती। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि परन्तु बाद में आने वालों ने ये कहना शुरू कर दिया कि यह बादशाह की मर्ज़ी पर आधारित है कि वह चाहे तो कुछ दे और चाहे तो न दे और चूँकि इस्लामी तालीम अभी पूरे तौर पर रासिख़ नहीं हुई थी तो वे लोग फिर क़ैयस और किसरा के तरीक़ की तरफ़ आकर्षित हो गए। जिस तरह दूसरे बादशाह करते थे वही तरीक़ फिर प्रचलति हो गया। (उद्धरित तफ़सीर कबीर, भाग 7 पृष्ठ 334 से 336)

इस्लामी हुकूमत के हर व्यक्ति के लिए रोटी कपड़े का इंतिज़ाम करने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो मज़ीद फ़रमाते हैं कि " 'इस्लामी हुकूमत ... जब वह अम्वाल की मालिक हुई तो उसने हर एक व्यक्ति की रोटी कपड़े का इंतिज़ाम किया इसलिए'' वही वर्णन हुआ है कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जब निज़ाम मुकम्मल हुआ तो उस वक़्त इस्लामी तालीम के अधीन हर एक व्यक्ति जीव के लिए रोटी और कपड़ा मुहय्या करना हुकूमत के जिम्मे था और वह अपने इस फ़र्ज़ को पूरी ज़िम्मेदारी के साथ अदा किया करती थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस ग़रज़ के लिए जनगणना का तरीक़ जारी किया और रजिस्टर खोले जिनमें समस्त लोगों के नामों का इंदिराज हुआ करता था। यूरोपीयन लेखक भी तस्लीम करते हैं "जैसा कि पहले वर्णन भी आ चुका है" कि पहली जनगणना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने की और उन्होंने ही रजिस्टर का तरीक़ जारी किया। इस जनगणना की वजह यही थी कि हर व्यक्ति को रोटी कपड़ा दिया जाता था और हुकूमत के लिए ज़रूरी था कि वह इस बात का इलम रखे कि कितने लोग इस मुल्क में पाए जाते हैं। आज यह कहा जाता है कि सोवीयत रशिया ने ग़ुरबा के खाने और उनके कपड़े का इंतिज़ाम किया है। हालाँकि सबसे पहले इस किस्म का इक़तिसादी निज़ाम इस्लाम ने जारी किया है और अमली रंग में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में हर गांव, हर क़स्बा और हर शहर के लोगों के नाम रजिस्टर में दर्ज किए जाते थे। हर व्यक्ति की पत्नी, उस के बच्चों के नाम और उनकी संख्या दर्ज की जाती थी और फिर हर व्यक्ति के लिए आहार की भी एक हद निर्धारित कर दी गई थी ताकि थोड़ा खाने वाले भी गुज़ारा कर सकें और ज़्यादा खाने वाले भी अपनी ख़ाहिश के अनुसार खा सकें।

तारीख़ों में वर्णन आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आरम्भ में जो फ़ैसले फ़रमाए उनमें दूध पीते बच्चों का ख़्याल नहीं रखा गया था और उनको उस वक़्त आहार इत्यादि की सूरत में मदद मिलनी शुरू होती थी जब माएं अपने बच्चों का दूध छुड़ा देती थीं। "जैसा कि पिछले ख़ुतबा में मैंने वर्णन किया था कि "एक रात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों के हालात मालूम करने के लिए चक्कर लगा रहे

थे कि एक तम्बू में से किसी बच्चे की रोने की आवाज़ आई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वहां ठहर गए। परन्तु बच्चा था कि रोता चला जाता था और माँ उसे थपकियाँ दे रही थी ताकि वह सौ जाए। जब बहुत देर हो गई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस तम्बू के अंदर गए और औरत से कहा कि तुम बच्चे को दूध क्यों नहीं पिलाती। यह कितनी देर से रो रहा है? उस औरत ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को पहचाना नहीं। उसने समझा कि कोई आम व्यक्ति है। इसलिए उसने जवाब में कहा कि तुम्हें मालूम नहीं उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ैसला कर दिया है कि दूध पीने वाले बच्चे को आहार नहीं मिले। हम ग़रीब हैं हमारा गुज़ारा तंगी से होता है। मैंने इस बच्चे का दूध छुड़ा दिया है ताकि बैतुल माल से इस का आहार भी मिल सके। अब यदि यह रोता है तो रोय उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की जान को जिसने ऐसा क़ानून बनाया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उसी वक़्त वापस आए और रास्ता में निहायत ग़म से कहते जाते थे कि उमर उमर मालूम नहीं तू ने इस क़ानून से कितने अरब बच्चों का दूध बंद कर दिया अगली नसल को कमज़ोर कर दिया है। इन सब का गुनाह अब तेरे ज़िम्मा है। यह कहते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हो सटोर में आए, दरवाज़ा खोला और एक बोरी आटे की अपनी पीठ पर उठा ली। किसी व्यक्ति ने कहा कि लाएं मैं इस बोरी को उठा लेता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा नहीं! ग़लती मेरी है और अब ज़रूरी है कि इस का ख़मयाज़ा भी में ही भुगतूं। इसलिए वह बोरी आटे की उन्होंने इस औरत को पहुंचाई और दूसरे ही दिन हुक्म दिया कि जिस दिन बच्चा पैदा हो उसी दिन से उस के लिए ग़ल्ला निर्धारित किया जाए क्योंकि उस की माँ जो उस को दूध पिलाती है ज़्यादा आहार की अधिकारी है।"

(इस्लाम का इक़तिसादी निज़ाम, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 61-62)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "इस्लाम ही है जिसने मुल्की हुक़ूक़ भी क़ायम किए हैं। इस्लाम के नज़दीक हर व्यक्ति की ख़ुराक, रिहाइश और लिबास की ज़िम्मेदार हुकूमत है और इस्लाम ने ही सबसे पहले इस उसूल को जारी किया है। अब दूसरी हुकूमतें भी इस की नक़ल कर रही हैं परन्तु पूरे तौर पर नहीं। बीमे किए जा रहे हैं। फ़ैमिली पैंशनें दी जा रही हैं। परन्तु यह कि जवानी और बुढ़ापे दोनों में ख़ुराक और लिबास की ज़िम्मावार हुकूमत होती है यह उसूल इस्लाम से पहले किसी मज़हब ने पेश नहीं किया। दुनियावी हुकूमतों की जनगणना इस लिए होती हैं ताकि टैक्स लिए जाएं या फ़ौजी भर्ती के सम्बन्ध में ये मालूम किया जाए कि ज़रूरत के वक़्त कितने नौजवान मिल सकते हैं। परन्तु इस्लामी हुकूमत में सबसे पहली जनगणना जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में करवाई गई थी वह इस लिए करवाई गई थी ताकि समस्त लोगों को खाना और कपड़ा प्रदान किया जाए इस लिए नहीं कि टैक्स लगाया जाए या यह मालूम किया जाए कि ज़रूरत के वक़्त फ़ौज के लिए कितने नौजवान मिल सकेंगे बल्कि वह जनगणना केवल इस लिए थी ताकि हर व्यक्ति को खाना और कपड़ा मुहय्या किया जाए। इस में कोई संदेह नहीं कि एक जनगणना रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में भी हुई थी परन्तु उस वक़्त अभी मुस्लमानों को हुकूमत हासिल नहीं हुई थी इस लिए इस जनगणना का मक़सद केवल मुस्लमानों की संख्या मालूम करना था। जो जनगणना इस्लामी हुकूमत के ज़माना में सबसे पहले हुई वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में हुई और इस लिए हुई ताकि हर व्यक्ति को खाना और कपड़ा मुहय्या किया जाए। यह कितनी बड़ी पहत्वपूर्ण चीज़ है जिससे समस्त दुनिया में अमन क़ायम हो जाता है। केवल यह कह देना कि दरख़ास्त दे दो इस पर ग़ौर किया जाएगा उसे हर इन्सान की ग़ैरत बर्दाश्त नहीं कर सकती'' कि दरख़ास्तें मँगवाई जाएं फिर ग़ौर किया जाए।'' इस लिए इस्लाम ने यह उसूल निर्धारित किया है कि खाना और कपड़ा हुकूमत के ज़िम्मे है और यह हर अमीर और ग़रीब को दिया जाएगा ख़ाह वह करोड़ पति ही क्यों न हो और ख़ाह वह आगे किसी और को ही क्यों न दे देता कि किसी को यह महसूस न हो कि उसे अदना समझा जाता है।" (तफ़सीर कबीर, भाग 10 पृष्ठ 308)

जो अमीरों को मिले गा तो अमीर भी यदि वह तक़्वा पर चलने वाले हैं तो बजाय इस से फ़ायदा उठाने के वह फिर आगे ज़रूरतमंदों को देंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में देशों को सूबा जात में तक़सीम किया गया। बीस हिज्री में अधिकृत देशों को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आठ राज्यों में तक़सीम फ़रमाया ताकि इंतिज़ामी उमूर में आसानी रहे। नंबर एक मक्का, नंबर दो मदीना, नंबर तीन शाम, नंबर चार जज़ीरा, नंबर पाँच बस्रा, नंबर छः कूफ़ा, नंबर सात मिस्र और नंबर आठ फ़लस्तीन।

(उद्धरित इस्लाम का इक्तेसादी निज़ाम, पृष्ठ 185 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

फिर शूरा का क़ियाम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में हुआ। मज्लिस-ए-शूरा में हमेशा लाज़िमी तौर पर इन दोनों गिरोह अर्थात मुहाजिरीन और अंसार के लोग शामिल होते थे। अंसार भी दो क़बीलों में बटे थे ओस और ख़ज़रज। इसलिए इन दोनों ख़ानदानों का मज्लिस-ए-शूरा में शरीक होना ज़रूरी था। इस मज्लिस शूरा में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत माअज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उबै बिन काअब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ैद बिन सब्नित रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल होते थे। मज्लिस के आयोजित करने का यह तरीक़ा था कि पहले एक मुनादी ऐलान करता था कि اَلصَّلٰوۃُ جَامِعَۃٌ अर्थात सब लोग नमाज़ के लिए जमा हो जाएं। जब लोग जमा हो जाते तो हज़रत उमर मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जा कर दो रकात नमाज़ पढ़ते थे। नमाज़ के बाद मंच पर चढ़ कर ख़ुतबा देते थे और बहस करने योग्य विषय प्रस्तुत किया जाता था। इस पर बेहस होती थी। मामूली और प्रतिदिन के कारोबार में इस मज्लिस के फ़ैसले काफ़ी समझे जाते थे लेकिन जब कोई अहम बात पेश आती थी तो मुहाजिरीन और अंसार का इजलास आम होता था और सब के इत्तिफ़ाक़ से वह अमर तै पाता था। फ़ौज की तनख़्वाह, दफ़्तर की तर्तीब, अमाल का तक़र्रुर, ग़ैर क़ौमों की तिजारत की आज़ादी और उन पर टैक्स का मुल्यांकन। उद्देश्य इस किस्म के बहुत से मुआमलात हैं जो शूरा में पेश हो कर तै पाते थे। मज्लिस-ए-शूरा का इजलास अक्सर ख़ास ख़ास जरूरतों के पेश आने के वक़्त होता था। इस के अतिरिक्त एक और मज्लिस थी वहां रोज़ाना इंतिज़ामात और ज़रूरीयात पर बात चीत होती थी। य्न्ह मज्लिस हमेशा मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में आयोजित होती थी और केवल मुहाजिरीन सहाबा इस में शरीक होते थे। सूबा जात और अज़ला की रोज़ाना ख़बरें जो दरबार-ए- ख़िलाफ़त में पहुँचती थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस मज्लिस में वर्णन करते थे और कोई बहस तलब अमर होता था तो उस में लोगों से राय ली जाती थी। मज्लिस-ए-शूरा के अरकान के अतिरिक्त आम प्रजा को इंतिज़ामी उमूर में मुदाख़िलत हासिल थी। सूबा जात और अज़ला के हाकिम अक्सर प्रजा की मर्ज़ी से निर्धारित किए जाते थे बल्कि कभी कबार बिल्कुल चुनाव का तरीक़ा अमल में आता था। कूफ़ा, बस्रा और शाम में जब अमाल राजस्व निर्धारित करने के लिए जाने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन तीनों राज्यों में आदेशों भेजे कि वहां के लोग अपनी अपनी पसंद से एक एक व्यक्ति का चुनाव कर के भेजें जो उनके नज़दीक समस्त लोगों से ज़्यादा दियानतदार और योग्य हो।

(उद्धरित फ़ारूक़ शिबली नुमानी से, पृष्ठ 180 से 182 दारुल इशाअत कराची 1991 ई.)

आमिलीन की तक़र्रुरी और उन के लिए क्या हिदायात दें? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो किस तरह हिदायात देते थे? इस बारे में लिखा है कि अहम ख़िदमात के लिए ओहदेदारों की तक़र्रुरी शूरा के ज़रीया की जाती। जिस पर सब व्यक्ति सहयोग कर लेते उस का चुनाव कर लिया जाता। बाज़-औक़ात सूबा या ज़िला के हाकिम को हुक्म भेजते कि जो व्यक्ति ज़्यादा काबिल हो उस का चुनाव कर के भेजो। इसलिए उन्ही चुने हुए लोगों को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आमिल निर्धारित फ़र्मा देते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आमिलीन की ज़्यादा तनख़्वाहें निर्धारित फ़रमाई थीं। यह भी बड़ी हिक्मत है ताकि ईमानदारी से ये लोग अपने काम कर सकें, कोई दुनियावी लालच न हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ओहदेदारों को ये नसाएह फ़रमाते कि याद रखू मैंने तुम लोगों को अमीर और सख़्त-गीर निर्धारित कर के नहीं भेजा बल्कि इमाम बना कर भेजा है ताकि लोग तुम्हारा अनुसरण करें। मुस्लमानों के हुक़ूक़ अदा करना। उनके के साथ मार पीट नहीं करनी कि वे ज़लील हों। सज़ाएं नहीं देनी बल्कि उनके हक़ अदा करने का प्रयास करना है। किसी की बेजा तारीफ़ नहीं करनी कि वह फ़ित्नों में पड़ें। इन के लिए अपने दरवाज़े हमेशा बंद नहीं रखने कहीं ताक़तवर कमज़ोरों को न खा जाएं। अपने आपको किसी पर प्राथमिकता न देना कि यह उन पर ज़ुलम है। जो व्यक्ति आमिल निर्धारित होता उस से यह वादा लिया जाता कि वह तुर्की घोड़े पर सवार नहीं होगा। बारीक कपड़े नहीं पहनेगा। छन्ना हुआ आटा नहीं खाएगा। दरवाज़े पर दरबान निर्धारित नहीं करेगा। ज़रूरतमंदों के लिए हमेशा दरवाज़े खुले रखेगा। यह हिदायात समस्त आमिलीन के लिए थीं और लोगों में पढ़ कर सुनाई जाती थीं। आमिलीन निर्धारित करने के बाद उनके धन और वस्तुओं की जांच की जाती थी। यदि आमिल की माली हालत में ग़ैरमामूली तरक़्क़ी होती जिसके बारे में वो तसल्ली न करवा सकते तो उस की पकड़ की जाती और अधिक धन बैतुल माल में जमा करवा लिया जाता। आमिलीन को हुक्म था कि हज के अवसर पर लाज़िमी जमा हों। वहां पब्लिक अदालत लगती जिसमें किसी व्यक्ति को किसी आमिल से शिकायत होती तो तुरंत उस का निवारण किया जाता। आमिलीन की शिकायात पेश होतीं उनकी तहक़ीक़ात के सम्बन्ध में भी एक ओहदा क़ायम था जिस पर बड़े बड़े सहाबा होते जो तहक़ीक़ात

के लिए जाते और यदि शिकायत सच्च होती तो आमिलीन की पकड़ की जाती।

(उद्धरित फ़ारूक़ अज़ शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 189 से 193 दारुल इशात कराची 1991 ई.)

आमिलीन की शिकायत के सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के रवैय्ये का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ही वाक़िया है। कूफ़ा के लोग बड़े बाग़ी थे और वह हमेशा अपने अफ़िसरों के ख़िलाफ़ शिकायतें करते रहते थे कि अमुक क़ाज़ी ऐसा है। अमुक में ये नुक़्स है और अमुक में वो नुक़्स है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी शिकायात पर हुक्काम को बदल देते और और अफ़्सर निर्धारित कर के भेज देते और उन अफ़िसरों को बदल देते। दूसरे अफ़्सर निर्धारित कर के भेज देते। कुछ लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को यह भी कहा कि यह तरीक़ दरुस्त नहीं है। इस तरह बदलते रहेंगे तो वे शिकायतें करते रहेंगे, आप रज़ियल्लाहु अन्हो बार-बार अफ़्सर को न बदलें। परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं अफ़िसरों को बदलता ही चला जाऊँगा यहां तक कि कूफ़े वाले ख़ुद ही थक जाएं। जब इसी तरह एक अरसा तक उनकी तरफ़ से शिकायतें आती रहें तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अब मैं कूफ़ा वालों को एक ऐसा गवर्नर भिजवाऊ गा जो उन्हें सीधा कर देगा। यह गवर्नर उन्नीस साल का एक नौजवान था जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सीधा करने के लिए भेजा। इस उन्नीस साला नौजवान का नाम अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला था। जब कूफ़े वालों को पता लगा कि उन्नीस साल का एक लड़का उनका गवर्नर निर्धारित हो कर आया है तो उन्होंने कहा आओ हम सब मिलकर उस से मज़ाक़ करें। कूफ़ा के लोग शरारती और शोख़ तो थे ही। उन्होंने बड़े-बड़े जुब्बा पोश लोगों को जो सत्तर-सत्तर, अस्सी अस्सी, नब्बे नब्बे साल के थे इकट्ठा किया और फ़ैसला किया कि इन सब बूढ़ों के साथ शहर के समस्त लोग मिलकर अब्दुर्रहमान का इस्तिक़बाल करने के लिए जाएं और मज़ाक़ के तौर पर इस से प्रशन करें कि जनाब की उमर क्या है? इस से उसकी उमर पूछें। जब वह जवाब देगा तो ख़ूब हंसी उड़ाएंगे। उसका मज़ाक़ उड़ाएंगे। कि छोकरा हमारा गवर्नर बन गया है। इसलिए इसी स्कीम के अनुसार वह शहर से दो तीन मील बाहर उस का इस्तिक़बाल करने के लिए आए। उधर से गधे पर सवार अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला भी आ निकले। कूफ़ा के समस्त लोग सफ़ें बांध कर खड़े थे और सबसे अगली क़तार में बूढ़े सरदारों की थी। जब अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला क़रीब पहुंचे तो उन लोगों ने पूछा कि आप ही हमारे गवर्नर निर्धारित हो कर आए हैं और अब्दुर्रहमान आप ही का नाम है? उन्होंने कहा हाँ। इस पर उनमें से एक बहुत बूढ़ा आदमी आगे बढ़ा और उसने कहा जनाब की उमर? अब्दुर्रहमान ने कहा मेरी उमर! तुम मेरी उमर का अनुमान इस से लगा लो कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो को दस हज़ार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का सरदार बनाकर भेजा था जिसमें अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल थे तो जो उमर उस वक़्त उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो की थी इस से एक साल मेरी उमर ज़्यादा है। यह सुनते ही जैसे ओस पड़ जाती है वे सब शर्मिंदा हो कर पीछे हट गए और उन्होंने एक दूसरे से कहा कि जब तक यह लड़का यहां रहे ख़बरदार तुम न बोलना अन्यथा यह खाल उधेड़ देगा। इसलिए उन्होंने बड़े अरसा तक गवर्नरी की और कूफ़ा वाले उनके सामने बोल नहीं सकते थे।

(उद्धरित खुत्बाते महमूद, भाग 23 पृष्ठ 222-223)

फिर मुहासिल का निज़ाम है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इराक़ और शाम की फ़ुतूहात के बाद ख़राज के नज़्म-ओ-नसक़ की तरफ़ तवज्जा की। जो ज़मीनें बादशाहों ने स्थानीय लोगों से जबरन छीन कर दरबारियों और उमरा को दी थीं वे स्थानीय लोगों को वापस दी गईं और साथ ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म-जारी फ़र्मा दिया कि अहल-ए-अरब जो इन मुल्कों में फैल गए हैं खेती नहीं करेंगे अर्थात कि अरब लोग जो हैं वह खेती नहीं करेंगे। इसका यह फ़ायदा था कि जो खेती के सम्बन्ध में तजुर्बा स्थानीय लोगों का था अरब इस से वाक़िफ़ नहीं थे। हर इलाक़े की खेती का अपना स्थानीय तरीक़ा है तो इसलिए यह हुक्म था कि बाहर के जो आए हुए हैं वे खेती नहीं करेंगे बल्कि खेती स्थानीय लोग ही करेंगे।

ख़राज पहले लोगों से ज़बरदस्ती लिया जाता था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़राज के क़वायद मुरत्तब करने के बाद ख़राज की वसूली का तरीक़ भी निहायत नरम कर दिया और नए बदलाव किए। ज़िम्मियों का बहुत ख़्याल रखते थे। ख़राज की वसूली के वक़्त बाक़ायदा दरयाफ़त फ़रमाते, किसी से ज़्यादती तो नहीं हुई? ज़िम्मी प्रजा से जो पार्सी या ईसाई थे उनसे राय तलब करते और उनकी राए का सम्मान किया करते थे।

(उद्धरित फ़ारूक़ अज़ शिब्ली नुमानी, पृष्ठ 198, 202, 207-208 दारुल इशाअत कराची 1991ई.)

खेती की तरक़्क़ी के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बे आबाद ज़मीनों के सम्बन्ध में फ़रमाया कि जो उनको आबाद करेगा वह उसकी मिल्कियत होगी। इस के लिए तीन वर्ष का समय निर्धारित किया गया। नहरें जारी की गईं। विभाग सिंचाई क़ायम किया गया जो तालाब इत्यादि तैयार करवाने का काम भी करता था। (उद्धरित फ़ारूक़ अज़ शिबली नुमानी पृष्ठ 209-210 दारुल इशाअत कराची 1991ई.)

ताकि खेती बेहतर हो। तो इस तरह यह चंद काम थे जो मैंने गँवाए भी हैं। अभी वर्णन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का चल रहा है इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा वर्णन होंगे।

एक ऐलान भी मैं करना चाहता हूँ वह यह कि एक अहमदिया इन्साईक्लो पीडीया बनाई गई है जिसे आज लॉन्च किया जाएगा। यह मर्कज़ी विभाग अहमदिया अभिलेखागार और रिसर्च सैंटर ने बनाई है। कुछ अरसा पहले उन्होंने इस पर काम का आरंभ किया था और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब यह वेबसाइट जमाअत के लोगों के लिए ऑनलाइन मुहय्या की जा रही है। इस तक पहुच जो है वह www.ahmadi-pedia.org पर हो सकती है जहां एक सर्च इंजन की तर्ज़ पर home page मवाद तलाश करने के लिए खुल जाएगा। उसे निहायत सादा और इस्तिमाल के लिए आसान रखा गया है। जमाअती पुस्तकें, व्यक्तित्व, वाक़ियात, अक़ाइद और इमारात के हवाले से बुनियादी मालूमात प्रदान की गई हैं। हर इन्ट्री के साथ सम्बन्धित वैबसाईटस वीडीयोज़ और जमाअती अख़बारात से मज़ामीन के लिंक प्रदान किए गए हैं ताकि तफ़सीली मालूमात इन माध्यमों से हासिल की जा सकें। तफ़सीलात के लिए दिए गए इन लिनक्स का एक फ़ायदा यह भी होगा कि जमाअत अहमदिया की अन्य वैबसाईटस तक भी सारिफ़ीन को रसाई हासिल होगी और वे समस्त अख़बारात और रसायल से लाभ प्रप्त कर सकेंगे। दुनिया-भर में फैले लोग जमाअत के पास बहुत सी मुफ़ीद मालूमात हैं जो कहीं रिकार्ड शूदा नहीं। अहमदी पीडीया की वेबसाइट पर एक ऑपशन "contribute" के नाम से भी दी गई है जहां वे किसी भी विषय पर अपनी मालूमात या शवाहिद या दस्तावे मुहय्या कर सकेंगे। यह नहीं कि ख़ुद सीधे डाल दें बल्कि वे उस की इंतिज़ामीया को मुहय्या करेंगे। इस मुहय्या करदा मवाद पर तहक़ीक़ और तसदीक़ के बाद उसे सम्बन्धित विषय की ऐन्ट्री में शामिल कर दिया जाएगा। इस तरह यह वेबसाइट समस्त जमाअत के सहयोग से जारी-ओ-सारी रहने वाला प्राजैक्ट बनेगी और इन शा अल्लाह हर अहमदी के लिए लाभदायक होगी।

यदि किसी को वेबसाइट पर कोई मतलूबा मवाद न मिले तो वह अहमदी पीडीया से सम्पर्क कर सकेगा और फिर ये लोग वेबसाइट पर मतलूबा मवाद मुहय्या करने का इंतिज़ाम करेंगे। फिर यह कहते हैं कि यदि यह समस्त मालूमात मुसद्दिक़ा माध्यम से मुहय्या की गई हैं जबकि यदि किसी प्रदान करने वाले के पास ऐसे शवाहिद हो जो किसी भी मालूमात के विपरीत हों तो हमें ऐसे शवाहिद मुहय्या करें ताकि बाद तहक़ीक़ जमाअत की तारीख़ को मुसद्दिक़ा तौर पर महफ़ूज़ करने का इंतिज़ाम किया जा सके। इस वेबसाइट की तैयारी के लिए समस्त टेक्नीकल मराहिल मर्कज़ी विभाग आई टी ने बड़ी सुन्दरता से परिपूर्ण किए हैं और विभाग आई टी ने इसके लिए बड़ी मेहनत की है जिसमें उनके मुस्तक़िल अमले के अतिरिक्त वालंटीयर्स भी शामिल हैं। मवाद की तैयारी के लिए मर्कज़ी विभाग आरकाइव् मुरब्बियान और वालंटेयरज़ ने बड़ी मेहनत की है और इस वेबसाइट के लिए इन सबने, जो भी यह काम करने वाले हैं, हुसूल-ए-मवाद, उर्दू से अनुवाद, मवाद की उप लोडिंग ग़रज़ समस्त कामों में अनथक मेहनत से काम किया है। अल्लाह तआला इन सबको प्रतिफल भी दे। आज जुमा की नमाज़ के बाद इंशा-ए-अल्लाह मैं इसको लॉन्च भी करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Virtual क्लास

नैशनल मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह हॉलैंड और नौमुबाईनात और विद्यार्थियों की अपने प्यारे इमाम से वर्चूअल मुलाक़ात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात ने जिस्म में एक नई रूह फूंक दी

मैं ने बहुत अच्छे प्रश्न और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से उन के बहुत सुन्दर उत्तर सुने

लजना इमाइल्लाह हॉलैंड के सालाना प्रोग्राम के अनुसार माह अप्रैल 2020 में हमारे एक वफ़द ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए यू के की यात्रा करनी थी। सब इंतिज़ामात मुकम्मल थे लेकिन यह मुबारक यात्रा कोविड की वजह से स्थगित करनी पड़ी जिसकी वजह से सब पर एक उदासी की कैफ़ीयत तारी हो गई। लेकिन प्यारे आक़ा ने वर्चूअल मुलाक़ात का अवसर अता कर के हमारी मायूसी को ख़ुशीयों में बदल दिया। प्रोग्राम की कामयाबी के लिए हुज़ूर अक़्दस की ख़िदमत में दुआ के लिए पत्र लिखे गए और सद्क़ात भी दिए गए।

प्रोग्राम के अनुसार तिथि 22 अगस्त 2020 ई. यूरोप की पहली ऑनलाइन मीटिंग का आरंभ हॉलैंड के स्थानीय समय के अनुसार 1 बजकर 45 मिनट पर हुई। मीटिंग में नैशनल मज्लिस-ए-आमला की 20 मेमब्रात शामिल हुईं। हुज़ूर अनवर ने दुआ के साथ मीटिंग का आरंभ फ़रमाया। एक घंटे की इस मुलाक़ात में नैशनल आमिला की सब मेमब्रात ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए अपने विभाग के बारे में रहनुमाई हासिल की। मीटिंग के अंत पर मज्लिस-ए-आमला की सभी मेमब्रात की ख़ुशियां देखने योग्य थीं। कुछ मेमब्रात के प्रभाव निमन्लिखित हैं।

★ मुबारका शकील साहिबा नैशनल सैक्रेटरी सनअत-ओ-तिजारत ने कहा : अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमें प्यारे हुज़ूर के साथ मुलाक़ात करने और प्यारे हुज़ूर की कीमती उपदेश को लाईव सुनने का अवसर मिला। अलहमदु लिल्लाह। यह मेरी ज़िंदगी का एक अनमोल दिन है। ख़ुदा करे हम इन आदेशों पर अमल करने वाली हों। आमीन ।

★ रूबीना अज़हर साहिबा नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत ने कहा : प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात ने शरीर में एक नई रूह फूंक दी है। प्यारे आक़ा के दिए गए टार्गेट्स की रोशनी में काम करने का जज़्बा एक नई रूह के साथ जाग गया। समस्त मज्लिस-ए-आमला की मेमब्रात के साथ मुशफ़िक़ाना प्यार भरे अंदाज़ और हिक्मत से नसीहत करना साबित करता है कि प्यारे हुज़ूर वास्तव में A Man of God हैं।

★ शमीम मज़हर साहिबा नायब सदर लजना इमाइल्लाह हॉलैंड ने कहा : अल्हम्दुलिल्ला, पुन: अल्हम्दुलिल्ला कि आज हमें प्यारे हुज़ूर अक़्दस से मुलाक़ात की तौफ़ीक़ मिली और उसने प्यारे हुज़ूर की सीधी हिदायात सुनने की तौफ़ीक़ दी। अल्लाह तआला हमें प्यारे हुज़ूर की आदेशों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

यह दो दिन लजना इमाइल्लाह हॉलैंड के लिए बहुत बाबरकत थे जिन में अपने प्यारे ख़लीफ़ा अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात हुई। हम सब ने ज़ाती तौर पर ख़लीफ़ा वक़्त की जमाअत के लिए मुहब्बत का नज़ारा देखा। अलहमदु लिल्लाह।

नौमुबाईनात और विद्यार्थियों की हुज़ूर अनवर मुलाक़ात

23 अगस्त 2020 ई. को जमाअत अहमदिया हॉलैंड की कुछ विद्यार्थियों और नौमुबाईनात को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ ऑनलाइन मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुलाक़ात का आरंभ हॉलैंड के स्थानीय समय के अनुसार 1 बजकर 43 मिनट पर हुआ। प्रोग्राम के आरंभ में आदरणीया अमीना अहमद साहिबा ने सूरत अल् तग़ाबुन की कुछ आयात तिलावत कीं और इसके बाद उस का डच अनुवाद प्रस्तुत किया। जिसके बाद आदरणीया नौरीन रज़ा साहिबा ने उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया। दो बहनों अम्तुल नूर महमूद और शाफ़िया महमूद ने कविता हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तरन्नुम से प्रस्तुत की जबकि डच नज़म एगनस सटीरिक ने सुनाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने प्रशन करने की इजाज़त प्रदान फ़रमाई। इस मरहले का आरंभ एक कुर्द नौमुबाईन बहन के हुज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में प्रशन पेश करने से हुआ। इसके बाद अन्य नौमुबाईनात और विद्यार्थियों ने प्यारे हुज़ूर की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ प्रकार के प्रशन प्रस्तुत कर के रहनुमाई हासिल की। यह बाबरकत मज्लिस क़रीबन एक घंटा रही। 2 बजकर 40 मिनट पर क्लास का अंत हुआ। सब विद्यार्थियों और नौमुबाईनात के चेहरों प्रसन्न थे कि उन्हें इन हालात में भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात कर के रहनुमाई लेना नसीब हुआ। यह महिज़ अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़ल और हुज़ूर-ए-अनवर की शफ़क़त की बदौलत ही संभव था। कुछ के तास्सुरात निमंलिखित हैं।

★ ग़ज़ाला मुज़फ़्फ़र साहिबा ने कहा कि मैं लफ़्ज़ों में वर्णन नहीं कर सकती कि मैं कितनी शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे हुज़ूर-ए-अनवर के साथ एक-बार नहीं बल्कि दो बार मुलाक़ात करने का अवसर मिला। एक दफ़ा मज्लिस-ए-आमला की मैंबर होने की हैसियत से और एक दफ़ा विद्यार्थी होने की हैसियत से। जब मुझे यह इलम हुआ कि हम अप्रैल में इंगलैंड नहीं जाएंगी तो बहुत उदास हुई। लेकिन इस मुलाक़ात ने सब कुछ भुला दिया। हुज़ूर अनवर ने हर प्रशन का उत्तर बहुत ख़ूबसूरती से दिया। केवल मज़हबी मुआमलात पर ही नहीं बल्कि दुनियावी मुआमलात पर भी बहुत सारी हिदायात दीं। यह बहुत ही ख़ूबसूरत अनुभव था।

★ बक्कतुल नूर महबूब साहिबा ने कहा कि आज अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़ल के साथ ख़ाकसार को हुज़ूर अक़्दस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल तआला की मुबारक सोहबत में बैठने की तौफ़ीक़ मिली। हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात बहुत ही ख़ूबसूरत, इतिहासिक और ईमान अफ़रोज़ थी।

कुछ नौमुबाईनात के विचार इस तरह हैं:

★ हियु बॉमर और अमीना अहमद ने कहा : मैं बहुत ख़ुश हूँ, सब कुछ बहुत बेहतरीन हो गया अल्हम्दुलिल्ला। मुझे अपना प्रशन पूछने का अवसर मिला और बहुत ही ख़ूबसूरत उत्तर मिला। मैं इस के लिए अल्लाह तआला की बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।

★ आर्यन मजीद साहिबा ने कहा : मैं इस प्रोग्राम से बहुत लुतफ़ अंदोज़ हुई हूँ। शुरू में, मैं बहुत डरी हुई थी। मैंने बेहतरीन प्रश्न और उनके ख़ूबसूरत उत्तर सुने। अनुवाद का इंतिज़ाम बहुत अच्छा था। मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल तआला का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि उन्होंने हमें वक़्त दिया।

★ साबिरीया मजीद साहिबा ने कहा : मैं अलमेरे जमाअत की एक कुर्द महिला हूँ। यह मुलाक़ात बहुत दिलचस्प थी। मैंने बहुत उम्दा प्रशन और हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल से उन के बहुत ख़ूबसूरत उत्तर सुने। मैं यहां अपनी बेटी, पिता, बहन, कज़न और एक दोस्त के साथ आई हूँ। मैं हुज़ूर-ए-अनवर का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि उन्होंने हमें वक़्त दिया।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह प्यारे हुज़ूर को सेहत-ओ-तंदरुस्ती वाली लम्बी आयु अता फ़रमाए और अफ़राद-ए-जमाअत के हिस्से में हमेशा अपने प्यारे इमाम से मुलाक़ात और उनसे सीधे रहनुमाई हासिल करने की सआदत क़ायम-ओ-दाइम रखे। आमीन

(अतीया असलम, सदर लजना इमाइल्लाह हॉलैंड)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 28 अगस्त 2020)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-23)

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

करोशीन और जर्मन

महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू (शेष...........)

★ महिला ने प्रश्न किया कि फिर हुज़ूर के निकट इस निराशा का हल केवल धर्म ही है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरा कहना है कि यदि आप हक़ीक़ी रूह के साथ धर्म पर कार्यरत हो जाएं तो आपको हक़ीक़ी संतुष्टि प्राप्त हो जाएगा।

★ इस पर इस महिला ने कहा कि मैं तो ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानती।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं तो जानता हूँ। आपका अपना तजुर्बा है मेरा अपना तजुर्बा है। असल बात यह है कि आप चीज़ों को दुनियावी नज़र से देखती हैं और मैं चीज़ों को धर्म की नज़र से देखता हूँ।

इस के बाद करोशीन महिला ने कहा कि मेरा इस्लाम या जमाअत अहमदिया से कोई सम्बन्ध नहीं है और यह मेरा पहला अवसर है कि मैं किसी इस्लामी धार्मिक समारोह में शामिल हुई हूँ। मैं ज़ाती तौर पर आपका और जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ। मैं और मेरी साथी यहां पर Documentary फ़िल्म बनाने आईं थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : वे लोग जो धर्म पर अनुकरण करते हैं उनकी संतुष्टि का एक सबूत तो यह है कि 36 हज़ार की संख्या में लोग यहां जमा हुए और उन समस्त लोगों को किसी किस्म का कोई दुनियावी लाभ दृष्टिगत नहीं था। बल्कि ये लोग दूर दूर से पैसे ख़र्च कर के यहां आए हैं। तथा यह भी इस बात का सबूत है कि आप स्वयं मुस्लमान नहीं हैं परन्तु इस के अतिरिक्त सच्च की तलाश में यहाँ आएं।

★ जर्मन महिला लेखक ने आख़िरी प्रश्न करते हुए कहा कि आपका जर्मनी के लोगों के लिए क्या संदेश है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जर्मन लोग खुले ज़हन के मालिक हैं और यूरोपियन यूनीयन की अखंडता को बरक़रार रखने का प्रयास कर रहे हैं। मैं तो यही कहूँगा कि वह अपने इसी रवैय्या को जारी रखें। आपके देश ने एक दिन सारे यूरोप का लीडर बनना है। अमरीका चाहता है कि आप कमज़ोर हो जाएं बल्कि कमज़ोर से कमज़ोर-तर हो जाएं। परन्तु यदि आप अपने देश और इस महाद्वीप के आपसी प्रेम को बरक़रार रखना चाहते हैं तो आपको मुत्तहिद रहना होगा।

इंटरव्यू का यह प्रोग्राम आठ बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। अब प्रोग्राम के अनुसार जलसा गाह karsruhe से बेतुल-सबूह (फ़्रैंकफ़र्ट) के लिए प्रस्थान था। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे तो आदरणीय मुनव्वर अहमद शहीद (लाहौर) की फ़ैमिली और बच्चे एक जगह खड़े थे। यह फ़ैमिली बेल्जियम से आई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रेम पूर्वक उनके पास खड़े हो गए और फ़ैमिली से बातचीत फ़रमाई और उनका हाल दरयाफ़त फ़रमाया और बच्चों को प्यार किया।

बच्ची ने कहा कि हुज़ूर आप हमारे घर कब आएँगे? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक फ़रमाया कि यदि आपका घर मेरी यात्रा के रास्ता में आया तो मैं इंशा अल्लाह चक्कर लगाऊंगा।

★ इस के बाद आठ बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इजतिमाई दुआ करवाई और क़ाफ़ला यहां से फ़्रैंकफ़र्ट के लिए रवाना हुआ।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गाड़ी जलसा गाह के सेहन से बाहर निकल रही थी तो रास्ता के दोनों अतराफ़ खड़े हज़ारों लोग पुरुष और महिलाएं और बच्चों, बच्चियों ने अपने हाथ हिलाते हुए अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहा। लोग निरन्तर नारे बुलंद कर रहे थे। लगभग एक घंटा चालीस मिनट की यात्रा के बाद साढ़े दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बेयतुल सबूह पधारे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के हाल में पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई।

नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

बैअत करने वाले लोगों के ईमान अफ़रोज़ विचार

★ आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 43 लोग ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के पवित्र हाथ पर बैअत का सौभाग्य पाया। इन बैअत करने वालों का सम्बन्ध 9 विभिन्न कौमों से था। बैअत का सौभाग्य पाने वाले लोगों की ख़ुशी वर्णन करने की शक्ति से परे थी। कुछ लोगों ने अपने विचारों और भावनाओं का प्रकटन किया जो निमंलिखित है :

★ स्पेन से आए हुए एक अरब मित्र इदरीस साहिब को भी इस जलसा में बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली है वह कहतेहैं कि मैं जलसे के निज़ाम और अनुशासन और इतने बड़े इजतिमा को देखकर हैरान रह गया। इतना बड़ा मजमा एक ख़लीफ़ा के पीछे एक लड़ी की तरह पिरोया हुआ था। यह नज़ारा रूह प्रवर था।

उन्हों ने कहा : मेरी ख़ुशी की इंतिहा नहीं है और मेरी इच्छा है कि मैं हर जलसे में शरीक हूँ क्योंकि दिल्ली और रुहानी तौर पर मेरा इस जलसा से एक सम्बन्ध जुड़ गया है।

★ स्पेन से ही आए हुए एक अरब मित्र मुहम्मद अरबी साहिब को भी इसी जलसा में बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली है। उन्होंने वर्णन किया कि :

मुझे इस महान जलसे में विभिन्न देशों से आए हुए अहमदियों के साथ शामिल हो कर बहुत ख़ुशी हुई है। मैं आपके महमान नवाज़ी और हुस्न अख़लाक़ की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। मैंने बहुत सी इस्लामी जमाअतें देखी हैं परन्तु किसी जमाअत में यह उदाहरण नहीं पाया कि वह एक हाथ पर इस तरह मुत्तहिद हो जिस तरह जमाअत अहमदिया लोग हैं।

★ साद पुत्री ज़रूक़ साहिबा मराक़शी अहमदी महिला हैं और स्पेन से जलसा सालाना में शिरकत के लिए अपने ग़ैर अहमदी बहन, बहनोई और उनके दो बच्चों समेत आई थीं। उन्होंने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए वर्णन किया :

मैं हुज़ूर अनवर को एम.टी.ए की स्क्रीन पर तो देखती थी परन्तु जब सामने देखा तो हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक से नूर फूटता हुआ दिखाई दिया और सहसा मेरी मुख से निकला "ख़ुदा की कसम यह इन्सान नहीं बल्कि कोई फ़रिश्ता है" हमें जलसे का बहुत ज़्यादा आनंद आया, समस्त जलसे में शामिल होने वालों ने अत्यधिक उच्च आचरण का प्रकटन किया। मैं अपनी ग़ैर अहमदी बहन और बहनोई को साथ लाई थी जिन्हों ने हुज़ूर अनवर के भाषण सुने और उन पर गहरा प्रभाव हुआ और बफ़ज़्ला तआला उन दोनों ने इस जलसा पर बैअत कर ली है। उनके डटे रहने के लिए दुआ की दरख़ास्त है।

★ आदरणीय अब्दुल्लाह सीरियन साहिब के पिता साहिब कई वर्षों से अहमदी हैं और यह अपने पिता साहिब के साथ रशिया में रहते थे परन्तु अब पढ़ाई के सिलसिला में हॉलैंड में रहते हैं। उनके पिता साहिब के माध्यम उन्हें तब्लीग़ तो होती रही परन्तु अभी तक उन्होंने बैअत नहीं की थी। इस वर्ष यह अपने पिता साहिब के साथ इस जलसा में शामिल होने के लिए आए। जलसे के पहले दिन प्रश्न उत्तर की मज्लिस के बाद हमारे मुबल्लिग़ से सदाक़त मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बात हुई जिसके अंत में उन्हें कहा गया कि आप ख़ुदा से यह दुआ करें कि हे अल्लाह में इस जलसा पर इस व्यक्ति की सदाक़त के बारे में जाँच पड़ताल करने की ख़ातिर आया हूँ तू मेरी रहनुमाई फ़र्मा। उन्होंने कहा कि मैंने इस से पूर्व भी दुआ की थी परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। उन्हें समझाया गया कि केवल एक दफ़ा दुआ करना

पर्याप्त नहीं है क्योंकि दुआ के लिए कई शर्तें हैं और उनको समक्ष रखते हुए आपको दर्द के साथ कुछ अरसा के लिए दुआ करनी चाहिए।

जलसे के दूसरे दिन हुज़ूर अनवर के तब्लीग़ी मेहमानों के साथ होने वाली मीटिंग के बाद कहने लगे कि मुझे क़ुरआन से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त की केवल एक दलील दे दें। हमारे मुबल्लिग़ ने उन्हें आयत-ए-करीमा لَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ और आयत-ए-करीमा اِنَّ الَّذِيۡنَ يَفۡتَرُوۡنَ عَلَى اللّٰهِ الۡكَذِبَ لَا يُفۡلِحُوۡنَ वर्णन करके हुज़ूर अलैहिस्सलाम की कुछ भविष्यवाणियों और जमाअत की प्रगति के बारे में बात की तो कहने लगे कि मैं बैअत करना चाहता हूँ क्योंकि अल्लाह तआला ने मुझे निशान दिखा दिया है। जब उनसे पूछा गया कि वह क्या निशान है? तो उन्हों ने बताया कि कल रात मैंने अल्लाह तआला से बड़े दर्द और इलहाह के साथ सजदा में दुआ की और रात को जब सोया तो ख़्वाब में देखा कि एक बड़ी सी दीवार पर जले हए शब्द में अहमदिया लिखा हुआ है और इस में से ग़ैरमामूली नूर फूट रहा है। फिर जब मैं जलसा गाह में हाज़िर हुआ और हुज़ूर अनवर का जर्मन मेहमानों से भाषण सुना तो उसके मध्य ही मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई कि काश मुझे हुज़ूर अनवर के साथ और आपके क़ुरब में खड़े होने का अवसरमिल जाए। कुछ देर के बाद ऐसे महसूस हुआ जैसे एक लम्हे के लिए मुझ पर तंद्रा अवस्था सी हुई और मैंने देखा कि मैं स्टेज पर हुज़ूर अनवर के पहलू में खड़ा हूँ।

वो कहते हैं :उस के बाद हक़ मेरे दिल में प्रवेश कर गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त की क़ुरआन-ए-करीम से एक दलील केवल और अधिक संतावना और संतुष्टि के लिए मांगी थी अन्यथा वास्तविकता यह है कि दुआ के बाद स्वप्न से ही मेरी तसल्ली हो गई थी। इस लिए जलसे के तीसरे दिन इजतिमाई बैअत में यह भी थे।

बेल्जियम से आने वाले दल में एक मित्र मुहम्मद इलियावी साहिब शामिल थे। उनकी की 40 वर्ष के क़रीब आयु है और पिछली एक वर्ष से ज़ेर तब्लीग़ थे। जलसा में शमूलीयत और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात के बाद उनको बैअत करने की भी तौफ़ीक़ मिली। उन्होंने अपनी भावनाओं का प्रकटन करते हुए बताया कि मैं पिछले दस वर्षों से नमाज़ें पढ़ता हूँ परन्तु जो सुकून मुझे यहां आकर मिला है वह मैंने कभी जीवन में महसूस नहीं किया था।

उनके के बारे में बेल्जियम के मुबल्लिग़ वर्णन करते हैं कि मुहम्मद इलियावी साहिब तीनों दिन जलसे का मंज़र देखकर रोते रहे। एक वर्ष की तब्लीग़ एक ओर और जलसा के तीन दिन एक ओर थे। इन तीन दिनों ने वह कर दिखाया जो पूरे वर्ष नहीं हो पाया। और यह केवल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से और समय के ख़लीफा के व्यक्तित्व की बरकत से सम्भव हुआ कि हुज़ूर अनवर को देखकर उनके दिल की काया पलट गई।

पूर्व की ओर जर्मनी से आए हुए तीन मेहमानों ने ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से हुज़ूर अनवर के हाथ पर बैअत की और बैअत के बाद कहने लगे कि हमें जमाअत के बारे में पहली दफ़ा यहां आकर ज्ञान हो है। ख़लीफतुल मसीह के व्यक्ति को देखकर और आपके भाषण सुनकर बैअत करने का फ़ैसला करना हकदापि सम्भव नहीं था। हमें बहुत ख़ुशी है कि हमें यह सौभाग्य मिला। हम वापस जा कर अपने समस्त दोस्तों को अहमदियत का संदेश पहुंचाएंगे।

एक सीरियन नौजवान बैअत करने के बाद जब वापस घर पहुंचे तो उनके चचा ने जमाअत और जलसे के बारे में उनसे पूछा तो इस नौजवान ने जलसा पर जो बातें सुनी थीं और जमाअत अहमदिया के जिन अक़ायद के बारे में सुना था वह अपने चचा के सामने वर्णन कर दिए। जलसा के अगले दिन ही उनका फ़ोन आ गया कि मेरे चचा भी अहमदियत में दाख़िल होना चाहते हैं और उनका कहना है कि मुझे जमाअत अहमदिया की सदाक़त पर कोई संदेह नहीं और मैं तुरंत उस मुबारक जमाअत में शामिल होना चाहता हूँ।

एक दोस्त ERVIN XHEPA साहिब अपनी पत्नी के साथ जलसे में शामिल हुए थे। यह दोनों LAW के विभाग से सम्बंधित हैं। जबकि उनकी पत्नी ने जलसे में शमूलीयत से पहले बैअत नहीं की थी परन्तु अलहमदु लिल्लाह जलसे में शामिल हो कर और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के मध्य ही उन्होंने अहमदियत के स्वीकार करने का ऐलान किया। उन्हों ने वर्णन किया कि जलसा सालाना के तजुर्बात अत्यधिक ग़ैरमामूली थे। जिस मुहब्बत, इख़लास और निस्वार्थ सेवा का प्रदर्शन मैं ने देखा है इस का मेरे दिल पर ग़ैरमामूली प्रभाव हुआ है।

उनके के सम्बन्ध में जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को ज्ञान हुआ कि उन्होंने अभी तक बैअत नहीं की हुई तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि वकील को क़ायल करने के लिए दलायल की आवश्यकता होती है इस लिए आपके पति को चाहिए कि आपको क़वी दलायल के साथ क़ायल करें। इस पर उन्हों ने कहा : मेरे पति ने जमाअत के सिलसिला में मुझे बहुत तब्लीग़ की है और मैं पर्याप्त अरसे से अपने दिल में अहमदियत स्वीकार कर चुकी थी परन्तु आज कामिल विश्वास से जमाअत अहमदिया को स्वीकार करती हूँ। उस समय उनकी आँखों से आँसू रवां थे।

8 जून 2015 ई. सोमवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस और पत्र मुलाहिज़ा फ़रमाए और उन रिपोर्टस और पत्र पर अपने पवित्र हाथ से हिदायात रक़म फ़रमाएं।

मेसीडोनिया से आने वाले दल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

आज विभिन्न देशों से आने वाले वफ़ूद की मुलाक़ातों का प्रोग्राम था। दस कर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के पुरुषों के हाल में पधारे जहां मुल्क मेसीडोनिया से आने वाले दल के सदस्यों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मेसीडोनिया से 62 लोग पर आधारित दल जलसा सालाना जर्मनी में शमूलीयत के लिए आया था। इस दल में 14 लोग ईसाई मित्र 27 लोग ग़ैर अहमदी मुस्लमान और 21 अहमदी लोगों शामिल थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन मेहमानों का हाल दरयाफ़त फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक मेहमानों से दरयाफ़त फ़रमाया कि आपके जलसा के बारे में क्या विचार हैं। इस पर एक मेहमान (जो टैलीविज़न के लेखक हैं) ने अर्ज़ किया कि वह मेसीडोनिया की ओर से हुज़ूर अनवर की सेवा में सलाम अर्ज़ करते हैं।

उन्हों ने जलसा की मुबारकबाद प्रस्तुत करते हुए कहा कि जो मुहब्बत, भाई चारा और सहिष्णुता मैंने आपकी जमाअत में देखी है वह और कहीं नज़र नहीं आती। जलसा के समस्त इंतिज़ामात बहुत उत्कृष्ट थे और प्रत्येक काम ख़ुश-उस्लूबी से हो रहा था।

वह जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि मध्य पूर्व से, शाम से ,पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के देशों से कई हज़ार मुहाजिरीन यूनान और मेसीडोनिया के देशों में पहुंचते हैं और फिर यहां से होते हुए आगे यूरोप के देशों में पहुंचते हैं तो क्या जो यहां के पार्लियामेंट में मेम्बर्स हैं वह उनकी सहायता कर सकते हैं कि वह यहां पर जाएं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हमारे सदस्य भी पहुंचते हैं जो विभिन्न हियूमन राईट्स की आर्गेनाईज़ेशन हैं उनसे हम सम्पर्क करते हैं और अपने सदस्यों के लिए एप्रोच करते रहते हैं। इन आर्गेनाईज़ेशन को सबकी सहायता चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमारे पास हुकूमत तो नहीं है। कुछ हुकूमती लीडरों को हम अख़लाक़ी तौर पर ध्यान दिलाते रहते हैं। परन्तु यह कहना कि किसी प्लेटफार्म पर जा कर उनके हुक़ूक़ के लिए लड़ें, ऐसा प्लेटफार्म हमारे पास नहीं है।

इसी जर्नलिस्ट ने प्रश्न किया कि हुज़ूर अनवर ने अपने कल के ऐडरैस में बताया था कि यूरोप में रहने वाले नौजवानों को यूरोप के कल्चर में मुदग़म नहीं होना चाहिए। इस से हुज़ूर की क्या मुराद है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैंने कहा था कि हमने इन सबको आला इस्लामी शिक्षा की ओर लाना है। इस लिए हम को ऐसी आचरण पैदा करने चाहिए ताकि संसार का इस्लाम की ओर ध्यान पैदा हो। हमने इस्लामी संसार को भी और ग़ैर मुस्लिमों को भी सही इस्लामी शिक्षा के बारे में बताना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं इस से पहले इंटीग्रेशन के लिए कहता रहा हूँ जिस मुल्क में जा कर रहना है वहां आबाद होना है और शहरीयत इख़तियार करनी है तो फिर ज़रूरी है कि वे इस देश की सेवा करे। वह इस मुल्क का व्यक्ति है उस का कर्तव्य है कि वह वफ़ा के साथ इस देश की प्रगति के लिए प्रयास करे।

(शेष.......................)

☆ ☆ ☆ ☆

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 5 August 2021 Issue No.31

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2 का शेष

लेने की आदत डालो। सात, आठ, नौ वर्ष की आयु में स्कार्फ लेना शुरू कर दो, और लड़कियों के सामने भी ले लो ताकि तुम्हारी शर्म ख़त्म हो जाए और जब तुम बड़ी नज़र आओ तो तुम पूरी तरह स्कार्फ लो। ठीक है, समझ आई? तुम्हारे लिए इतना काफ़ी है और बड़ी लड़कियों के लिए इतना काफ़ी है कि असल चीज़ पर्दे का उद्देश्य यह है कि लज्जा होनी चाहीए और यह जो यूरोपियन हैं वेस्टर्न Influence के अंदर आते हैं, पुराने ज़माना में उनके लिबास भी यहां तक होते थे (इस अवसर पर हुज़ूर अनवर ने अपने हाथों की कलाइयों की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया। संकलनकर्ता), लंबी मैक्सी फ्राकस होती थीं। अब तो ये नंगे फिरते हैं नाँ?

प्रश्न यह है कि मर्द जो है वह अच्छा और Well Dressed उस वक़्त कहलाता है जब उसने ट्राओज़र पूरे पहने हों, कोट पहना हो, टाई लगाई हो। और महिलाएं को कहते हैं कि तुम Well Dressed उस वक़्त होगी, जब तुमने मिनी स्कर्ट पहनी हो। यह मुझे फ़लसफ़ा समझ नहीं आया।

इसलिए मर्दों को न देखो। और महिलाएं भी जो स्वयं अपने आपको नंगा करती हैं, अपनी बेइज़्ज़ती करवाती हैं। इसलिए अहमदी लड़की, अहमदी महिलाओं का सम्मान इसी में है कि अपनी लज्जा को क़ायम करे क्योंकि असल वस्तु लज्जा है और यह लज्जा है जो दूसरों को तुम्हारे पर ग़लत नज़र डालने से रोकती है।

प्रश्न : आस्ट्रेलिया के वाक़फ़ात-ए-नौ के इसी प्रोग्राम गुलशन वक़्फ़ तिथि 12 अक्तूबर 2013 ई. में एक बच्ची ने हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रश्न किया कि हम रमज़ान के रोज़े किस आयु में रखना शुरू करें? इस इस्तिफ़सार का उत्तर अता फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : रोज़े तुम पर उस वक़्त फ़र्ज़ होते हैं जब तुम लोग पूरी तरह Mature हो जाओ। यदि तुम स्टूडेंट हो और तुम्हारी परीक्षा हो रही हैं तो उन दिनों में यदि तुम्हारी आयु तेराह, चौदह,पंद्रह वर्ष है तो तुम रोज़े न रखो। यदि तुम बर्दाश्त कर सकती हो तो पंद्रह सोला वर्ष की आयु में रोज़े ठीक हैं। लेकिन सधारणता फ़र्ज़ रोज़े जो हैं वे सतरह, अठारह वर्ष की आयु से फ़र्ज़ होते हैं, इस के बाद बहरहाल रखने चाहिऐं। बाक़ी शौक़िया एक, दो, तीन, चार रोज़े यदि तुमने रखने हैं तो आठ दस वर्ष की आयु में रख लो, फ़र्ज़ कोई नहीं हैं। तुम्हारे पर फ़र्ज़ होंगे जब तुम बड़ी हो जाओगी, जब रोज़ों को बर्दाश्त कर सकती हो। यहां(आस्ट्रेलिया संकलनकर्ता) विभिन्न मौसमों में कितना फ़र्क़ होता है? Day Light कितने घंटे की होती है? सेहरी और अफ़तारी में कितना फ़र्क़ होता है? 12 घंटे? औरSummer में कितना होता है? 19 घंटे का होता है? हाँ तो बस 19 घंटे तुम भूखे नहीं रह सकते। यू.के में भी आजकल, जो पीछे गर्मियां गुज़री हैं, उनमें तुम्हारे रोज़े छोटे थे और वहां लंबे रोज़े थे। साढ़े अठारह घंटे के रोज़े थे। तो स्वीडन इत्यादि में बाईस घंटे के रोज़े होते हैं। तो वहां तो बहरहाल वक़्त को एडजस्ट करना पड़ता है। क्योंकि इतना लंबा रोज़ा भी नहीं रखा जा सकता। लेकिन बर्दाश्त उस वक़्त होती है जब तुम जवान हो जाती हो, कम से कम सतरह अठारह वर्ष की हो जाओ तो फिर ठीक है। फिर रोज़े रखों। समझ आई? तुम्हारे अम्मां अब्बा क्या कहते हैं? दस वर्ष की आयु में तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ हो गए हैं? लेकिन आदत डाला करो। छोटे बच्चों को भी दो तीन रोज़े हर रमज़ान में रख लेने चाहिऐं ताकि पता लगे कि रमज़ान आ रहा है। लेकिन रोज़े न भी रखने हों तो सुबह उठों अम्मां अब्बा के साथ सहरी खाओ, नफ़ल पढ़ो, नमाज़ें नियमित पढ़ो। तुम लोगों का, स्टूडैंटस का और बच्चियों का रमज़ान यही है कि रमज़ान में उठे ज़रूर और सेहरी खाएं, एहतिमाम करें और इस से पहले दो या चार नफ़ल पढ़ लें। फिर नमाज़ें नियमित पढ़ें। क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें।

(संकलनकर्ता ज़हीर अहमद ख़ान, विभाग रिकार्ड दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी लंदन)

(धन्यवाद् के साथ अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 अक्तूबर 2020)

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

इस मामला में चिन्तन करेगा उसे अच्छी तरह नज़र आ जाएगा ,बल्कि ऐसे तौर पर नज़र आ जाएगा जैसे शीशे में कोई शक्ल देख लेता है।

याद रखना चाहिए कि ईमान का छीना जाना दो तरह पर होता है। एक तो अंबिया अलैहिमुस्सालम के इन्कार से, इससे तो कोई भी इन्कार नहीं कर सकता और यह प्रमाणित बात है। दूसरा औलिया अल्लाह और आल्लाह के मामूरीन के इन्कार से ईमान छीना जाता है।

अंबिया के इन्कार से ईमान की छीनना तो बिल्कुल स्पष्ट बात है और सब जानते हैं,परन्तु फिर भी याद रखना चाहिए कि अंबिया अलैहिमुस्सालम के इन्कार से ईमान की छीनना इस लिए होता है कि नबी कहते हैं हम ख़ुदा की तरफ़ से आए हैं और ख़ुदा फ़रमाता है कि जो कुछ ये कहते हैं यह मेरी बात है। यह मेरा नबी है। इस पर ईमान लाओ। मेरी किताब को मानो और मेरे आदेशों का पालन करो। जो व्यक्ति अल्लाह तआला की किताब पर ईमान नहीं लाता और उन वसीयतों और सीमाओं पर जो इस में वर्णन किए गए हैं,अनुकरण नहीं करता है। वह उनसे मुन्किर हो कर काफ़िर हो जाता है। परन्तु वह अवस्था जिससे अल्लाह के औलिया के इन्कार से ईमान छीना जाता है। दूसरी है। एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है مَنْ عَادَ لِيْ وَلِيًّا فَاٰذَنْتُهٗ لِلْحَرْبِ- अर्थात जो व्यक्ति मेरे वली के साथ दुश्मनी करता है वह मानो मेरे साथ जंग करने को तैयार है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

की हिफ़ाज़त का भी माध्यम है।

وَمَنْ عَصَانِيْ فَإِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ पहले अर्ज़ किया था कि मेरी औलाद में से यदि कोई शिर्क में पड़ जाए तो वह मेरी औलाद में से नहीं। परन्तु नबी में रहम भी होता है। औलाद को औलाद नहीं समझना और ख़ुदा की मुहब्बत को प्राथमिकता देना और चीज़ है और उन के लिए ख़ुदा से रहम का निवेदन करना और चीज़ है। अत: हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम दुआ करते हैं कि प्रथम तो मेरी औलाद को शिर्क से बचाईए लेकिन यदि उनमें से कोई मेरे ढ़ंग के ख़िलाफ़ करले तो मैं तो उसे यही कहूँगा कि वह मेरी औलाद नहीं परन्तु तू चूँकि क्षमाशील और दयालु है इसलिए तेरे क्षमाशील और दयालु होने से मैं यही उम्मीद करता हूँ कि तू उनके गुनाह बख़्शा दे और उनकी तरक़्क़ी के सामान पैदा करता रह। इस में यह बताया कि औलाद से नाराज़गी का यह अर्थ नहीं कि उनसे दिल भी सख़्त कर लें बल्कि सज़ा ज़ाहिरी हो दिल में उन के लिए दुआ करता रहे और उनकी इस्लाह दृष्टिगत रखे, न कि उनकी तबाही चाहे।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 484 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad